R.N.I. No. : MPHIN/2000/3253 - Year 26

डाक पंजीयन/ छ.ग./रायपुर संभाग/81/2024-26

प्रकाशन फरवरी 2026

आदित्य यश

मासिक पत्रिका

भाजपा सरकार में अफसरशाही, भ्रष्टाचार और अव्यवस्था से जूझ रहे मुख्यमंत्री

संपादक : शोभा यादव

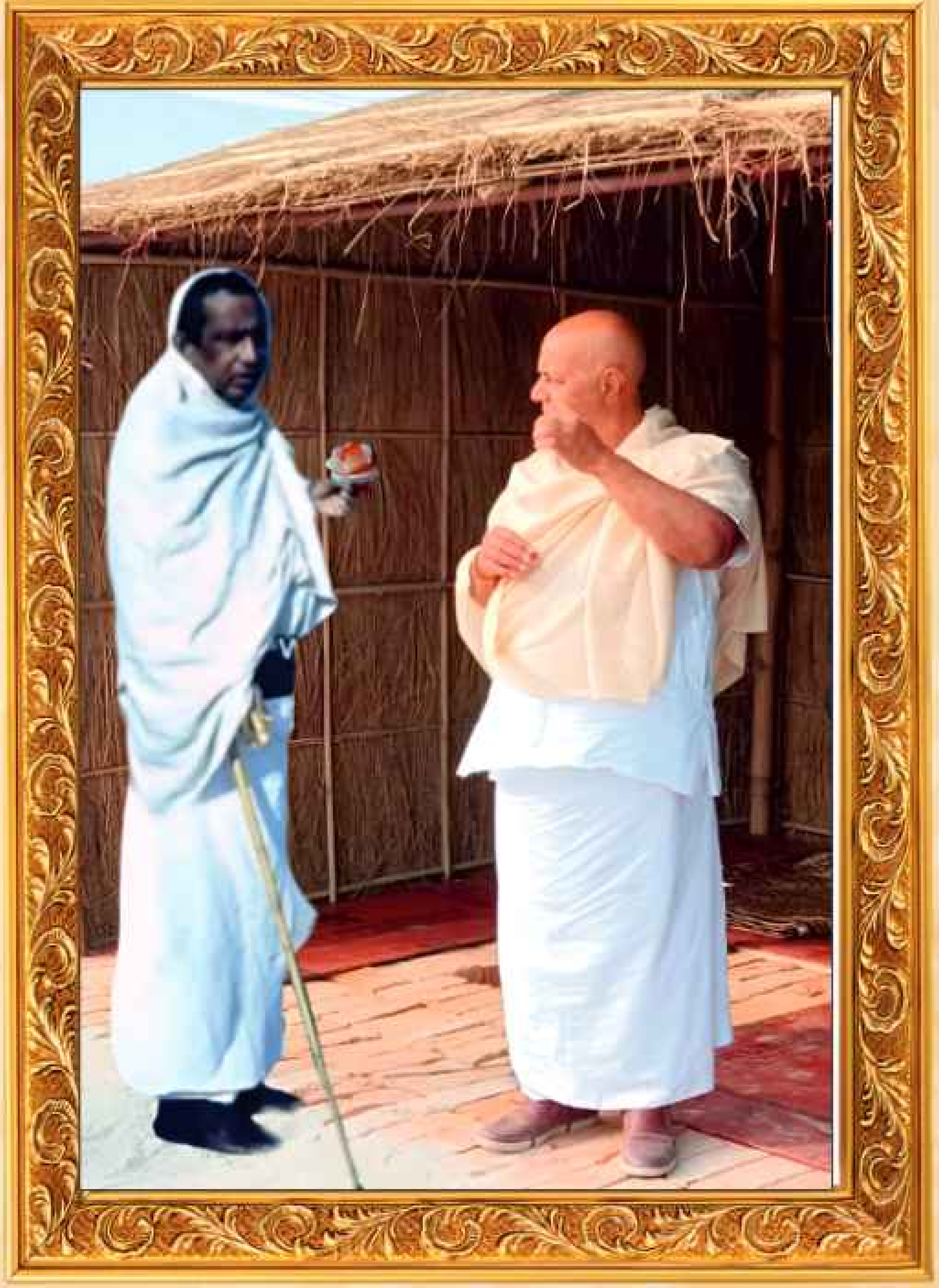

परमपूज्य अघोरेश्वर गुरूपद बाबा संभवरामजी

मुख्य कार्यालय : अघोर पीठ , श्री सर्वेश्वरी समूह संस्थन देवस्थानम्

पो. अवधूत भगवान राम कुष्ठ सेवा आश्रम, पड़ाव, वाराणसी – 221008 फोन नं. : 0542-2339266

छत्तीसगढ़ ब्रांच : अघोर पीठ, वामदेव नगर, गम्हरिया, जशपुर/ब्रम्ह निष्ठालय, सोगड़ा, जशपुर - छ.ग.

आदित्य-यश

मासिक पत्रिका

फरवरी – 2026 अंक : 07 वर्ष : 26

"आदित्य यश" मासिक पत्रिका को आपकी आशा के अनुरूप बनाने का हमारा प्रयास है ।

प्रधान संपादक : कु. शोभा यादव

संपादन सहयोग : श्रीमती मीना सप्रे, सुश्री विजय लक्ष्मी, श्रीमती अंजुला सिंह

आवरण एवं सज्जा : किशोर मराठे

आलेख संकलन : राव आलोक कुमार सिंह

हमारा पता : 127 आनन्द नगर, रायपुर – छ.ग.

मो. 9425205199

e.mail : vijurao2003@yahoo.co.in

मूल्य : 25/–

इस अंक में ....

- पटेल और नेहरू के लिये मतभेदों से ऊपर था राष्ट्रहित बापू का अंतिम आत्मोत्सर्ग जब गांधी ने...
- मंडल कमीशन लागू करवाने में शरद यादव का योगदान
- खरसिया उपचुनाव – हार कर भी कैसे जीते जूदेव
- राजिम कुंभ (कल्प) 2026
- देवभूमि छ.ग. क्यों चौकाता है पद्मनाभा स्वामी मंदिर के ७वें दरवाजे का रहस्य
- गुनाहों का देवता
- खल्लारी के पुरातात्विक ऐतिहासिक वैभव का अनुशीलन
- कोरबा का रहस्यमयी भटगांव जहां घरों के दरवाजे सामने नहीं...
- स्त्रियों के ललाट में लगा सिंदूर, शूभता, शुचिता, एकता का परिचायक
- न ऐलोपैथी, न होमियोपैथी, दुनिया को चाहिये सिम्पैथी
- ऐसे मंदिर जहां साल में एक बार पड़ती है सूर्य की किरणें
- छ.ग. की भाजपा सरकार में अफसरशाही, बढ़ रहे भ्रष्टाचार..
- छ.ग. का चेंदरू – ' द टाईगर बॉय' का स्मरण
- बहादुर कलारिन की मांची : अनजाना अतीत
- दुष्यंत की नज़र उनके युग की नई पीढ़ी के गुस्से और...
- सर्वश्रेष्ठ बॉलीवुड क्लासिक फिल्म 'गाइड' के अधिकार, अभिनेता...

शेषशायी विष्णु

१२वीं सदी ईसवीं
रुद्री – धमतरी छ.ग.

लेखकों के द्वारा व्यक्त विचारों अथवा आलेखों से संपादक की सहभागिता नहीं है

RMNI No. MPHIN/2003/3253 & Year 26

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक : कु. शोभा यादव, 127 – आनन्द नगर, रायपुर से प्रकाशित एवं शारदा प्रिंटर्स, 127 – आनन्द नगर से मुद्रित
संपादक – कु. शोभा यादव मेल आई.डी. vijurao2001@yahoo.co.in

संपादकीय ...

कांग्रेस में राष्ट्रीय और प्रदेश स्तर पर सिर्फ टाइम पास ! संगठन स्तर पर बदलाव के मात्र चर्चे !

छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रस हो या राष्ट्रीय संगठन । पदाधिकारियों के कार्यकाल दो दो बार बढ़ते जा रहे हैं । कही कोई बदलाव नहीं । सत्ता से जैसे ही विमुख हुए बस टालमटोल की स्थिति । वैसे ही डीला-डाला संगठन चल रहा है । कुछ थोड़ी बहुत सुगबुगाहट, फिर सब शांत ।

यह स्थिति राष्ट्रीय और प्रादेशिक संगठन दोनों में ही चल रही है । सत्ता पक्ष लगातार विरोध के मुद्दे दे रही है । विपक्ष चाहे तो इन मुद्दों को बड़े जोर शोर से उठा सकती है । पर एक आध दिन का धरना प्रदर्शन और फिर चुप्पी । उग्र आंदोलन कहीं नज़र नहीं आता । भाजपा के ढुलमुल शासन से त्रस्त जनता अभी तो सत्ता परिवर्तन के मुड में दिख रही है । पर प्रदेश कांग्रेस संगठन अपने पक्ष में इस मौके को लपकने में असफल दिख रही है । सभी नेता अपनी अपनी रोटी सेंकने में लगे हैं ।

प्रदेश कांग्रेस की ताकत तब दिखती है जब को नेता, जेल की लंबी हवा खाने के बाद बाहर आता है और पूरी कांग्रेस उसके बाहर आने की खुशी बड़ी रैली के रूप में दिखती है । फिर चाहे वे कांग्रेस का नेता हो या किसी नेता का पुत्र जो पार्टी का पदाधिकारी भी नहीं होता ।

अंदर की ख़बर है कि वरिष्ठ नेताओं में शुमार पूर्व विधानसभा अध्यक्ष, मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री किसी से भी केंद्रीय नेतृत्व खुश नहीं है । अब उनकी नज़र अब प्रदेश के युवा नेताओं की ओर जा रही है । जिनमें दो प्रमुख नाम, जो उभर कर आ रहे हैं वे दोनों नेता ही पिछड़ा वर्ग से हैं । इनमें से एक स्वर्गीय नेता के पुत्र हैं । इनका संगठनात्मक और प्रशासनिक अनुभव अभी बहुत ही कम, या कह लीजीये सिर्फ पांच वर्ष का ही है । वहीं दूसरे नेता का प्रशासनिक अनुभव लंबा है । राष्ट्रीय नेता के करीबी हैं और ना सिर्फ अपने विधानसभा क्षेत्र बल्कि पूरे प्रदेश में उनकी अच्छी पकड़ है । लोकसभा चुनाव भी लड़ चुके हैं । संगठन और बाहरी अधिकतर लोग भी इनके लिये कांग्रेस में बड़े ओहदे की उम्मीद रखे हुए हैं । पर अंत में फिर केंद्रीय नेतृत्व पर आ कर बात रुक जाती है ।

अभी यह समय उपयुक्त है कि प्रदेश के वरिष्ठ नेता अपने आपसी घमासान को कुछ समय के लिये देर रखें और पार्टी को पूरी तरह से संगठित होकर मजबूत नेतृत्व दें । वर्ना वे समझ लें कि ढाई साल बाद मिलने वाली चाबी हाथ में आते-आते फिर फिसल सकती है । फिर कोई महंत, बघेल, सिंहदेव या अन्य हाथ मलते रह जायेंगे और फिर जनता उन्हीं परेशानियों से जूझती रहेगी और कांग्रेस को कोसते रहेगी ।

कांग्रेस केंद्रीय नेतृत्व को भी बहुत गहराई से मंथन करना होगा कि हाथ से फिसल कर निकली सत्ता को वापस अपने हाथों में पकड़ने की क्या युति होगी ।

पटेल और नेहरू के लिए मतभेदों से ऊपर था राष्ट्रहित

पीयूष बलेले

सरदार पटेल के आलोचक तो अब ज्यादा मुखर रहे नहीं, लेकिन उनके प्रशंसक जब भी उनकी तारीफ करना शरू करते हैं, तो देसी रियासतों को भारत संघ में मिलाने के अलावा पटेल की तारीफ में ज्यादा कुछ कह नहीं पाते। इसके बाद प्रशंसक पटेल की तारीफ करने के बजाय पंडित नेहरू की मिर्च-मसाला लगाकर बुराई करने लगते हैं और अंत में जोड़ देते हैं कि अगर नेहरू की जगह पटेल होते तो ऐसा करते।

वैसे, इस सारे तुलनात्मक निंदा कार्यक्रम को हवा मिलती है नेहरू और पटेल के बीच गंभीर वैचारिक मतभेद से। दोनों नेता खुद भी इस बात को मानते थे कि आर्थिक नीतियों और सांप्रदायिकता के मुद्दे पर उनके विचारों में बुनियादी फर्क है। लेकिन दोनों यह भी मानते थे कि आपसी असहमति के साथ काम करने पर वे सहमत हैं। नेहरू और पटेल के बीच 1948 से 1950 के बीच हुए पत्र व्यवहार से पता चलता है कि एक दौर ऐसा भी आया जब नेहरू और पटेल दोनों को जिम्मेदारी के साथ यह लगा कि उन दोनों में से किसी एक को भारत सरकार से अलग हो जाना चाहिए। और दोनों ने ही यह कहा कि बेहतर होगा कि वह खुद पद त्याग दे ताकि दूसरा बेहतर ढंग से देश को संभाल सके। इससे भी बड़ी बात यह कि बापू भी यह सोचने लगे थे कि दोनों नेताओं में से किसी एक को छुट्टी दे दी जाए, ताकि दूसरा बेहतर ढंग से देश को चला सके। गजब यह है कि दोनों नेताओं को यह अनुभूति उस गाढ़े वक्त में हो रही थी, जब जनवरी 1948 में महात्मा गांधी अपने जीवन के आखिरी उपवास पर थे और दिल्ली शरणार्थियों के बोझ से दबी जा रही थी।

लेकिन दोनों नेता यह भी जानते थे कि अगर वे ऐसे समय में एक दूसरे से अलग होते हैं, जब देश मजहबी दंगों की आग में जल रहा है, महात्मा गांधी उपवास पर बैठे हैं और नई-नई सरकार अभी चलना शुरू करने वाली है, तो पूरी दुनिया में न सिर्फ भारत के बारे में गलत संदेश जाएगा, बल्कि देशविरोधी तत्व इसका लाभ उठाएंगे। ऐसे में तय किया गया कि इस विवाद का समाधान महात्मा गांधी से ही करा लिया जाए। पहले नेहरू जी ने अपना पक्ष रखते हुए एक ड्राफ्ट गांधी जी को भेज दिया और उसकी प्रति पटेल का पठा दी। अगले दिन पटेल ने भी ठीक यही काम किया। अब फैसला साबरमती के संत को करना था।

यहां यह जानने में भी हर्ज नहीं है कि पटेल ने गांधी जी को लिखे पत्र में कहा था कि मेरे व्यवहार से अगर जवाहरलाल और आपको दुख होता है तो बेहतर है, अब आप मुझे मुक्त कर दें। वहीं नेहरू का कहना था कि अगर प्रधानमंत्री स्वतंत्र

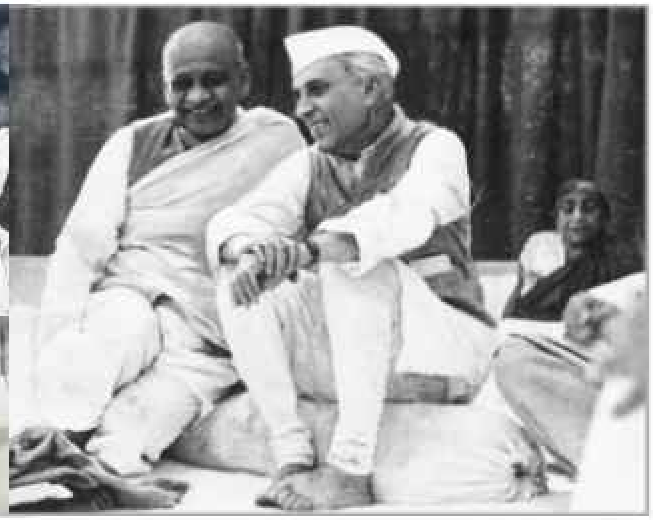

रूप से अपना काम नहीं कर सकता तो वे यह पद छोड़ देना चाहते हैं। इसके अलावा नेहरू जहां सारी दुश्वारियों के बावजूद बापू के अनशन को उचित मान रहे थे, वहीं पटेल को यह अपने ही लोगों पर गांधीजी की कुछ ज्यादा ही सख्त कार्रवाई लग रही थी। नेहरू वाली बात की तस्दीक मुख्यमंत्रियों को लिखे नेहरू जी के पत्र से होती है, जबकि पटेल वाली बात को गांधी जी की जीवनी 'अनमोल विरासत' में उनकी पौत्री सुमित्रा कुलकर्णी और मौलाना आज़ाद ने अपनी किताब 'इंडिया विन्स फ्रीडम' में बेहतर ढंग से समझाया है। मौलाना ने तो यहां तक, कहते हैं कि पटेल का व्यवहार गांधीजी के प्रति हिकारत भरा हो गया था। बहरहाल आज़ादी के छह महीने के भीतर राष्ट्रपिता को अपने दो सिपहसालारों में से एक को चुनना था। इसके लिए जरूरी था कि तीनों लोग एक साथ बैठें और फिर फैसला हो।

लेकिन यह मीटिंग कभी हो नहीं पाई। यह मुलाकात 31 जनवरी 1948 को तय की गई थी, लेकिन उसके एक दिन पहले ही महात्मा की हत्या कर दी गई। हां, एक चीज जरूर हुई कि हत्या वाले दिन पटेल गांधी जी से मिले और दोनों ने करीब एक घंटे साथ गुज़ारे। इसी मुलाकात में गांधी जी ने पटेल से कहा कि मौजूदा हालात में दोनों में से किसी को भी हटाना संभव नहीं है। आप दोनों को मिलकर ही काम करना होगा। यह बात खुद पटेल ने नेहरू को बताई।

बापू की हत्या ने हालात को हमेशा के लिए बदल दिया। 3 फरवरी 1948 को नेहरूजी ने सरदार को पत्र लिखा, 'अब बापू के स्वर्गवास के बाद हर बात बदल गई है और अब हमें बिलकुल भिन्न और अधिक विकट संसार का सामना करना है। पुराने विवादों और झगड़ों का अब बहुत महत्व नहीं रह गया है। यह आवश्यक तकाजा है कि हम सब और अधिक निकट आकर सहयोगपूर्वक काम करें। बेशक दूसरा कोई मार्ग नहीं है।' इसी पत्र में नेहरू ने कहा कि जब भी कोई विवाद होगा तो दोनों आपस में लंबी बातचीत कर किसी नतीजे पर पहुंचा करेंगे। दो दिन बाद जवाबी पत्र में पटेल ने जो लिखा वह तारीखी है, 'पत्र में व्यक्त किए गए स्नेह और सहृदयता का मुझ पर गहरा प्रभाव पड़ा है – असल में उन्होंने मुझे अभिभूत कर लिया है।'

दोनों नेताओं ने अपने सर्वोच्च नेता की बात मान ली। और किस कदर मानी इसकी बानगी दोनों के बीच पटेल की मृत्यु तक चले संवाद से मिलती है। मार्च 1950 में पूर्वी बंगाल (अब बांग्लादेश) में जारी हिंसा से नेहरू इतने व्यथित थे कि उन्होंने अपने पद से इस्तीफा देने का मन बना लिया। इस बात की सूचना उन्होंने पटेल के अलावा राजेंद्र प्रसाद को भी दी। लेकिन यहां एक बार फिर पटेल ने फरवरी 1948 के पत्रों का ज़िक्र किया और नेहरूजी को दोनों के रिश्तों के बारे में बापू की आखिरी वसीयत का हवाला दिया। राष्ट्रपिता के आखिरी फरमान से दोनों ही बंधे थे और दोनों साथ बने रहे।

लेकिन क्या वैचारिक विरोध के बावजूद परस्पर सम्मान से भरी दो बड़े नेताओं की कहानी उन आलोचकों की समझ में आएगी, जिनका खोखला राष्ट्रवाद नकार पर खड़ा है। बेहतर होगा वे नेहरू से न सही तो पटेल से ही राष्ट्रवाद का अर्थ समझने की कोशिश करें। ऐसा करने में शायद वे बिना किसी का कद घटाए लौह पुरुष की सच्ची तारीफ करने प्रसंग भी खोज पाएं।

बापू का अंतिम आत्मोत्सर्ग जब गांधी ने अपने ही लोगों के खिलाफ उपवास का अहिंसक हथियार उठाया

गांधी दर्शन

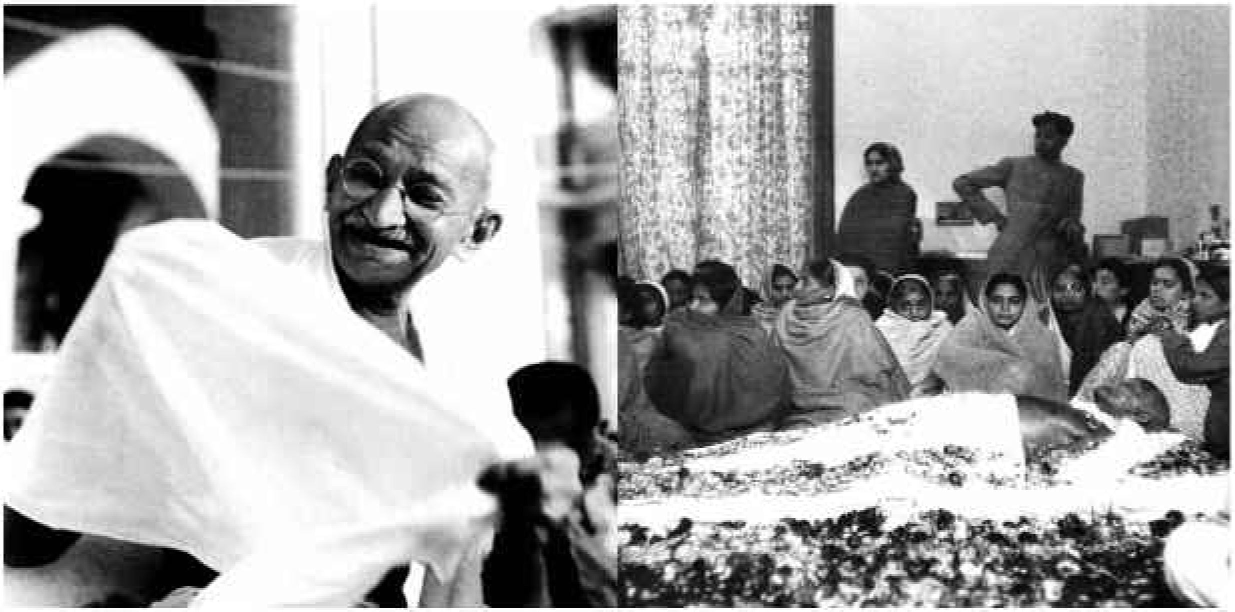

13 जनवरी 1948 कड़ाके की ठंड और उससे भी कहीं ज्यादा सर्द दिल्ली की फिजाएं, जो सांप्रदायिकता और हिंसा की आग में झुलस रही थीं। इसी दिन बिड़ला हाउस (अब गांधी स्मृति) में 78 वर्ष के एक वृद्ध ने अपने जीवन के सबसे कठिन और अंतिम उपवास का संकल्प लिया। यह उपवास किसी विदेशी हुकूमत के खिलाफ नहीं था, बल्कि एक अर्थ में अपने ही लोगों के खिलाफ था जो हिंसा पर उतर आए थे।

गांधी का पूरा दर्शन सत्य, अहिंसा और सांप्रदायिक सद्भाव की बुनियाद पर टिका था। लेकिन आज़ादी मिलते ही जब देश ने नफरत की चादर ओढ़ ली, तो उस बूढ़े इंसान को ऐसा लगने लगा कि इस हिंसा में वे सारे मूल्य खो जायेंगे जो इस देश को धरोहर हैं। उन्हें लगा कि जिस अहिंसा को देश ने अपनाया था, वह शायद अंग्रेजों को भगाने की एक रणनीतिक मजबूरी थी, हृदय का परिवर्तन नहीं।

वे खुद से सवाल कर रहे थे - क्या ये वही लोग हैं जो मेरी एक आवाज पर लाठियां खाने को तैयार रहते थे ? आज वही हाथ एक-दूसरे के खून से रंगे हैं। गांधीजी ने बड़ी बेबाकी से स्वीकारा था कि जब कोई विकल्प नहीं था, तब लोगों ने उनकी अहिंसा को माना, लेकिन आज जब 'परमाणु बम' और हिंसा की भाषा समझ आने लगी है, तो लोगों ने उनके सिद्धांतों को किनारे कर दिया है।

पुत्र की चिंता और पिता का अडिग विश्वास :

गांधीजी के इस फैसले ने पूरी दुनिया को हिला दिया। उनके पुत्र देवदास गांधी ने एक भावुक पत्र लिखकर उन्हें रोकने की कोशिश की। देवदास ने तर्क दिया, "आप तो अनंत धैर्य के प्रतीक हैं, फिर इस अधीरता का परिचय क्यों ? मृत्यु को प्राप्त करके आप वह हासिल नहीं कर पाएंगे जो जीवित रहकर कर सकते हैं।"

बापू ने अपने पुत्र को जवाब दिया वह उतना ही स्पष्ट था जितना उनका जीवन। उन्होंने लिखा, "यह हड़बड़ी में लिया गया फैसला नहीं, बल्कि ईश्वर की आज्ञा है। मेरी चार दिनों की प्रार्थना और आत्ममंथन का परिणाम है।" गांधी जानते थे कि अगर दिल्ली (भारत का हृदय) नफरत की भेंट चढ़ गई, तो पूरी दुनिया से मानवता का विश्वास उठ जाएगा।

गांधी के उपवास की व्याख्याएं :

गांधीजी के इस उपवास की स्वतंत्र भारत में

अपनी अपनी समझ के अनुसार व्याख्याएं की जाती रही हैं । एक व्याख्या यह है कि यह पाकिस्तान को 55 करोड़ रुपये दिलाने के लिए था । लेकिन इतिहास के पन्नों को पलटें तो यह तर्क गले नहीं उतरता । हकीकत यह थी कि बंटवारे के समय तय हुई 75 करोड़ की राशि में से 20 करोड़ दिए जा चुके थे, शेष 55 करोड़ भारत की नैतिक और कानूनी देनदारी थी । कुछ लोगों का मानना था कि यदि भारत यह राशि रोकता, तो मामला अंतरराष्ट्रीय न्यायालय (हेग) में जाता और अंततः भारत को वह राशि देनी ही पड़ती । गांधीजी का आग्रह केवल इतना था कि एक नव-स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में भारत पर 'वादाखिलाफी' या 'बेईमानी' का दाग न लगे । उनके लिए 55 करोड़ मुख्य मुद्दा नहीं, बल्कि सहायक मांग थी ताकि भारत की वैश्विक साख बची रहे ।

विश्वभर में हुए अनेक गहन शोध गांधी के उपवास को बड़े स्पेक्ट्रम में देखते हैं और बताते हैं कि इस उपवास का असली निशाना वे ताकतें थीं, जो अंग्रेजों के जाते ही भारत को नफरत की आग में झोंककर एक संकीर्ण धार्मिक राष्ट्र बनाना चाहती थीं । पाकिस्तान इस 'मजहबी उन्माद' के जाल में सफल हो चुका था, लेकिन भारत में गांधी एक अभेद्य दीवार बनकर खड़े थे । कुछ साम्प्रदायिक समूह इस ताक में थे कि अराजकता फैले और वे धर्म के आधार पर सत्ता की बिसात बिछा सकें ।

78 साल के गांधी ने अपनी जर्जर देह को दांव पर लगाकर उनके इन मंसूबों पर पानी फेर दिया । उन्होंने साफ कर दिया कि विश्व मानवता के मानकों और लोकतंत्र की मजबूत जड़ों के अनुसार भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश होगा । भारत किसी एक धर्म की जागीर नहीं, बल्कि हर नागरिक का साझा घर होगा । यही कारण है कि सांप्रदायिक ताकतें आज भी गांधी को छाती पीट पीट कर कोसती हैं, क्योंकि बापू ने अपने आत्मोत्सर्ग से भारत के 'धर्मनिरपेक्ष स्वरूप' की नींव मजबूत की ।

और पूरी दुनिया ठहर गई :

वह 6 दिन जिन्होंने दुनिया को थमने पर मजबूर किया । दुनियाभर में गांधीजी के उपवास पर गहरी चिंता होने लगी । विश्वभर के समाचार पत्र उनके उपवास की खबरों से भरे पड़े थे । 13 जनवरी से शुरू हुआ यह अनिश्चितकालीन उपवास 18 जनवरी तक चला । नोआखाली की सड़कों और बिहार के गांवों में मीलों पैदल चलने के कारण बापू का शरीर पहले ही जर्जर हो चुका था । पूरी दुनिया को लग रहा था कि शायद 78 साल की यह देह इस बार हार जाएगी । लेकिन गांधी की आत्मशक्ति ने नफरत को हरा दिया । 17 जनवरी तक दिल्ली की सड़कों पर 'खून का बदला खून' के नारों की जगह 'महात्मा गांधी जिंदाबाद, बापू की जान बचाओ' के नारे गूंजने लगे । 18 जनवरी को जब सभी समुदायों के प्रतिनिधियों ने अमन का संकल्प पत्र सौंपा, तब जाकर बापू ने अपना अनशन तोड़ा ।

एक विचार जो कभी विदा नहीं होगा :

गांधी का यह अंतिम उपवास हमें याद दिलाता है कि कभी-कभी अपनों को जगाने के लिए खुद को मिटाना पड़ता है । 30 जनवरी 1948 को गांधीजी की पार्थिव विदाई भले ही हो गई, लेकिन उनका वह 'अंतिम उपवास' आज भी हर उस इंसान के ज़मीर पर एक दस्तक है जो नफरत के रास्ते पर चलता है ।

गांधी एक देह नहीं, एक विचार हैं । और विचार कभी विदा नहीं होते ।

मंडल कमीशन लागू करवाने में शरद यादव का योगदान

राम बहोर साहू

जिस तरह से राजनीति का सामाजिक ताना-बाना बुना जा रहा है, शरद यादव जी होते तो जरूर अपनी सोच का नया ताना-बाना बुनते । आज राजनीति में उनकी कमी खलती है ।

बात साल 1989 की है । देश में जनता दल के नेतृत्व वाली राष्ट्रीय मोर्चा सरकार बनी जिसका नेतृत्व विश्वनाथ प्रताप सिंह कर रहे थे । कई घटक दलों के अलावा भारतीय जनता पार्टी बाहर से इस सरकार का समर्थन कर रही थी । इसी सरकार में श्री शरद यादव केंद्रीय मंत्री बने वस्त्र एवं खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय के । जनता दल ने अपने चुनाव पूर्व घोषणा पत्र में मंडल कमीशन की सिफारिशों को लागू किए जाने की लिखित रूप से घोषणा की थी, जिससे भाजपा के शीर्ष नेतागण - अटल बिहारी वाजपेयी और लाल कृष्ण आडवाणी - अनजान नहीं थे ।

मंडल कमीशन लागू करवाने में शरद यादव जी का बड़ा योगदान रहा, हालाँकि इसकी ज्यादा चर्चा नहीं होती । चौधरी (ताऊ) देवी लाल और वी.पी. सिंह जी के बीच शुरू से अनबन हो जाने के कारण सरकार संकट में थी । तब शरद यादव जी ने प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह से कहा कि अगर आप पिछड़ों को आरक्षण नहीं देंगे तो हम लोग ताऊ देवी लाल जी के साथ चले जाएंगे । इसी के बाद, वी.पी. सिंह को समझ में आया और अगस्त 1990 में पिछड़े वर्ग को 27 प्रतिशत आरक्षण देने की घोषणा संसद कर दी ।

वी.पी. सिंह की इस राजनैतिक चाल से नाखुश भाजपा ने अपना समर्थन वापस लिए जाने की घोषणा कर दी, जिसके बाद राष्ट्रीय मोर्चा की गठबंधन सरकार अल्पमत में आ गई । सरकार आखिरकार नवंबर में गिर ही गई । इससे फायदा वी.पी. सिंह को न हो कर, युवा तुर्क नेता कहे जाने वाले चंद्रशेखर को हुआ जिन्होंने कांग्रेस के समर्थन से सरकार बना ली ।

पिछड़ों को आरक्षण मिलने और मंडल कमीशन लागू किए जाने के बाद जब लाल कृष्ण आडवाणी ने आरक्षण के विरोध में रथ यात्रा शुरू की, तो दूसरी तरफ मंडल मसीहा शरद यादव जी ने "मंडल बचाओ" (यानी आरक्षण बचाओ) अभियान यात्रा शुरू कर दी, और कई राज्यों से अपनी यात्रा निकाली । 1990–91 में एक तरफ मंडल तो दूसरी तरफ कमंडल चल रहा था । तब भारतीय जनता पार्टी ने उस समय लोकसभा चुनाव में कई बाबाओं को उतारा जिसमें से कुछ जीत हासिल कर लोकसभा पहुंचे । तब साफगोई में माहिर शरद यादव जी ने सदन में खड़े होकर बेबाकी से कहा कि, इन चिमटा बाबाओं का यहां पर क्या काम ।

जाति जनगणना कराए जाने की मांग शरद यादव जी, संसद और संसद से बाहर, लंबे समय से कर रहे थे । उसकी शुरुआत वर्तमान भारत सरकार ने पिछले साल जाति जनगणना कराए जाने की घोषणा के रूप में की थी । अब भारत सरकार ने 7 जनवरी 2026 को जाति जनगणना कराए जाने की अधिसूचना जारी कर दी है । ये शरद यादव जी की राजनैतिक विचारधारा की जीत है । शरद यादव जी कभी भी जातिवाद की राजनीति को विशेष महत्व नहीं देते थे । बल्कि सांझी विरासत के हिमायती शरद जी कहते थे कि सांझी विरासत बचेगी तो देश बचा रहेगा ।

उस दौरान दूरदर्शी शरद यादव जी ने "सांझी विरासत बचाओ सम्मेलन" के साथ ही "जाति नहीं जमात बनाओ, समतामूलक समाज बनाओ" का नारा दिया और अनेक राज्यों में इस तरह के कई कार्यक्रम आयोजित किए । आज इस विचारधारा की खास जरूरत महसूस की जा रही है ।

अपने अंदाज में राजनीति में मधुर व्यवहार और संबंध कैसे बनाए रखना, यह शरद जी को बखूबी आता था । आज का राजनीतिक परिवेश बहुत बदल गया है । अब राजनीति में वह वैचारिक पारदर्शिता और परस्पर सम्मान की परंपरा नहीं रही । बल्कि एक कॉर्पोरेट- स्टाइल राजनीति ने उसकी जगह ले ली है ।

जिस तरह से राजनीति का सामाजिक ताना- बाना बुना जा रहा है, शरद यादव जी होते तो जरूर अपनी सोच का नया ताना-बाना

खरसिया उप चुनाव - हार कर भी कैसे जीते जूदेव

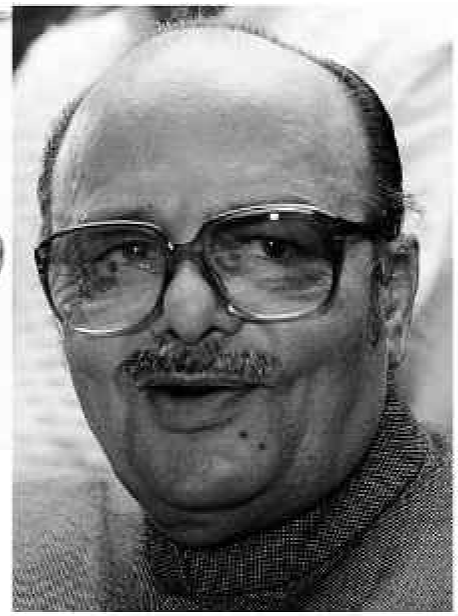

कांग्रेस के नेता अर्जुन सिंह और जशपुर कुमार दिलीप सिंह के मध्य खरसिया उपचुनाव न महज कांटे की टक्कर रही, खूब चुनावी शोर गुल हुआ, पर खेल की भावना ऐसी कि दिलीप सिंह चुनाव हार कर भी विजयी रहे।

अविभाजित मध्यप्रदेश का यह चुनाव छत्तीसगढ़ के हर चुनाव के लिए आदर्श रहा और रहेगा। 1988 में यह चुनाव हुआ। नवभारत के रायगढ़ प्रतिनिधि महावीर बेरीवाल और अनुपम दास गुप्ता थे लेकिन बिलासपुर से मुझे कैमरे के साथ कवरेज के लिए भेजा गया। सुबह की ट्रेन से यहां से और भी पत्रकार जाते इसमें पत्रकार रुद्र अवस्थी और मैं साथ होते।

चुनाव प्रचार के समाप्ति के पूर्व पूरे शबाब पर था इसलिए मुझे रायगढ़ आउट खरसिया में रहने को कहा गया। अर्जुन सिंह पसीना बहा रहे थे। सुबह उठ कर पूछते आज कैसा लग रहा है?

बड़ी प्रतिष्ठा का चुनाव था। यद्यपि जूदेव और अर्जुन में कोई परिवारिक रिश्ता नहीं था लेकिन सभा को जूदेव अपने उदबोधन में अर्जुन सिंह को मामाजी कहते, दोनों ने कभी एक दूजे के खिलाफ को स्तरहीन बात नहीं कही, कांग्रेस प्रत्याशी की जीत के लिए पैसे बंटा तो जूदेव के गांव आगमन पर पद पखारे जाते। मुझे याद है पंडवानी गायिका तीजन बाई खरसिया में ठहरी थी। तब वह शौहरत की तरफ चल पड़ी थी। जूदेव के साथ खरसिया के लखीराम अग्रवाल थे, अर्जुन सिंह को वह बहुत खटक रहे थे, वो लखीराम को सेठजी कहते। (बाद बिलासपुर में अर्जुन सिंहजी ने प्रेस के सामने कहा - यदि लखीराम जी को मेरा सेठजी कहना नापसन्द लगा तो मैं उसे वापस लेता हूं।)

एक एक वोट का लिये संघर्ष था लग रहा था। कांटे की टक्कर में मतगणना में कांग्रेस नेता अर्जुन सिंह विजयी रहे पर यह आशानुरूप नहीं थी। लेकिन दिलीप सिंह जूदेव मतगणना में कम रहे पर उनका मनोबल परस्त नहीं था। रायगढ़ में जन-मानस यही मानता रहा। लिहाजा विजय जुलूस जूदेव का धूम से निकला, हार के भी वो जीत गए।

बुनते। वे यूं ही मंडल मसीहा नहीं बने, उन्होंने राजनीतिक जीवन को हमेशा एक खुली किताब की तरह खुला रखा। वे छात्र जीवन काल से ही गरीबों, दलितों, आदिवासियों पर हो रहे अत्याचार और पिछड़ों के आरक्षण के सवाल पर प्रबल पक्षधर थे और जमीनी स्तर पर हकीकत को देखते और संसद में पेश करते थे। उन्होंने अपने समय में सरकार की जन विरोधी नीतियों के खिलाफ आवाज उठाई, आंदोलन किए, जिसके चलते उन्हें कई बार अनेक जगहों पर जेल में बंद किया गया। यहीं से वे राष्ट्रीय स्तर के शीर्ष समाजवादी नेता बन गए। आज राजनीति में उनकी कमी खलती है।

राजिम कुंभ (कल्प) 2026

१ से १५ फरवरी तक संगम नगरी राजिम बनेगी आध्यात्मिक ऊर्जा का केंद्र

आइए, आस्था की डुबकी लगाइए, संस्कृति से जुड़िए और आध्यात्मिक ऊर्जा का अनुभव कीजिए।

छत्तीसगढ़ की पावन धरती एक बार फिर आस्था और अध्यात्म के महासंगम का साक्षी बनी है। प्रदेशवासियों सहित देशभर के श्रद्धालुओं को राजिम कुंभ (कल्प) में शामिल होने का आमंत्रित हैं। यह आयोजन छत्तीसगढ़ की पहचान, परंपरा और सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक है। इस अवसर पर सभी श्रद्धालू अपने परिवार के साथ राजिम पहुँचकर इस दिव्य महापर्व के साक्षी बनते हैं।

राजिम कुम्भ का दिव्य एवं भव्य आयोजन १ फरवरी से १५ फरवरी (माघ पूर्णिमा से महाशिवरात्रि) तक आयोजित हो रहा है। महानदी, पैरी और सोंढूर नदियों के पवित्र त्रिवेणी संगम पर स्थित राजिम, छत्तीसगढ़ का प्रमुख धार्मिक तीर्थ स्थल है, जिसे "छत्तीसगढ़ का प्रयाग" भी कहा जाता है। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी यहाँ संतों, महात्माओं, नागा सन्यासियों और लाखों श्रद्धालुओं का आगमन है।

आस्था, संस्कृति और समरसता का संगम

राजिम कुंभ केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि धर्म, अध्यात्म, संस्कृति और परंपरा का जीवंत उत्सव है। श्रद्धालु यहाँ संगम में स्नान कर पुण्य लाभ अर्जित करते हैं, संतों के दर्शन और आशीर्वाद प्राप्त करते हैं तथा आध्यात्मिक प्रवचनों से जीवन को नई दिशा देते हैं। राजिम का त्रिवेणी संगम प्राचीन काल से साधना और तपस्थली रहा है। यहाँ स्थित राजीव लोचन मंदिर और अन्य प्राचीन मंदिर इस क्षेत्र की आध्यात्मिक विरासत को दर्शाते हैं। मान्यता है कि संगम में स्नान करने से पापों का नाश होता है और जीवन में सुख-शांति की प्राप्ति होती है। राजिम कुंभ (कल्प) का भव्य समापन १५ फरवरी, महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर होगा।

इस बार आयोजन का मुख्य संदेश भारतीय आध्यात्मिक परंपराओं को जन-जन से जोड़ते हुए सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक गौरव को बढ़ावा देना है। राजिम कुंभ के माध्यम से प्रदेश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने का प्रयास किया जा रहा है। प्रशासन द्वारा श्रद्धालुओं की सुविधा और सुरक्षा के लिए व्यापक प्रबंध किए जा रहे है।

देवभूमि छत्तीसगढ़

रविन्द्र गिन्नौरे

हरिहर क्षेत्र जहां शिवनाथ नदी अपनी दो धारा होकर प्रवाहित होती है वह हरिहर क्षेत्र अनेक सदियों की धरोहरों को समेटे हुए है। आदि शंकराचार्य के स्मार्त शिवलिंग के मंदिर श्रृंखला में है। पंडित कृपाराम गौरहा ने धूमनाथ माहात्म्य में इसका मनोहारी वर्णन किया है। कार्तिक मास की पूर्णिमा पर यहां दीप-दान किया जाता है।

छत्तीसगढ़ का एकमात्र खूबसूरत आईलैंड, मण्डव ऋषि की तपोस्थली होने से मदकू द्वीप नाम पड़ा। भारत के स्मार्त शिवलिंग मंदिर समूह केवल मदकू द्वीप में मिले हैं। मदकू एक प्राकृतिक द्वीप है जहां शिवनाथ नदी अपनी दो धारा में विभक्त होकर सौन्दर्य से परिपूर्ण आइलैंड बनाती है। जहां प्रागैतिहासिक काल से लेकर ग्यारहवीं शताब्दी की विरासत दृश्यमान है। अनेक पुरावशेष धरोहर को संजोए यह हरिहर क्षेत्र है। 1930 के दौरान पंडित कृपाराम गौरहा ने 'मदकू महात्म्य' की रचना संस्कृत में की थी। इक्कीसवीं शताब्दी में द्वीप में उत्खनन के बाद यहां प्रागैतिहासिक काल से ग्यारहवीं शताब्दी तक के अवशेष पाये गये। एक नजर मदकू द्वीप पर डालें,

१ छत्तीसगढ का पवित्रतम हरिहर क्षेत्र जागृत स्थल, एकमात्र आईलैंड
२ प्रागैतिहासिक काल से ग्यारहवीं शताब्दी की स्थापत्य कला एवम् शिलालेख
३ पुरावशेष उत्खनन में 10वीं 11वीं सदी के मंदिर
४. देश में एकमात्र स्मार्त शिव लिंग मंदिर समूह
५ नृत्यरत चतुर्भुजी गणेश की कलचुरी कालीन दक्षिणावर्त प्रतिमा
६ मण्डूक्य ऋषि की तपोभूमि
७ भगवान राम का वनगमन परिपथ

भौगोलिक पारिस्थिकी : मदकू द्वीप शिवनाथ नदी की धारा के दो भागों में विभक्त होने से द्वीप के रुप में विद्यमान प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर अत्यंत प्राचीन रमणीय स्थल है ।इसे मडकू, मदकू या मदकू द्वीप के नाम से भी जाना जाता है।

पवित्र स्थल : मदकू द्वीप चारों तरफ शिवनाथ नदी से घिरा हुआ है। यहां शिवनाथ नदी दक्षिण से आकर उत्तर-पूर्व की ओर कोण बनाते हुए ईशान कोण की ओर बहती है ।

प्राचीन वास्तु शास्त्र के अनुसार जिस जगह में कोई नदी ईशान कोण में बहती है उसे पवित्र क्षेत्र माना जाता है। हिन्दू धर्म में ऐसे ही स्थान पर मन्दिरो, बड़े नगरों एवं राजधानियों की स्थापना की जाती रही है ।

२१ डिग्री को सबसे ज्यादा पवित्र माना जाता है। अयोध्या में सरयू २२ डिग्री पर है। प्रयाग में २३ डिग्री है द्य मदकू द्वीप में शिवनाथ नदी २२ डिग्री पर है द्य यही कारण है कि पुरातन काल से ही इस स्थल का सनातन धर्मियों के लिए विशेष आध्यात्मिक महत्व का क्षेत्र रहा है। जहां पूजा पाठ एवं विशाल यज्ञ होते रहे थे ।

शिवनाथ नदी की त्रिधारा :भारत में मदकू द्वीप एकमात्र जगह है जहाँ नदी अपनी तीन धारा से द्वीप बनाती हुई आगे बढती हुई ईशान कोण में एक धारा में सिमट जाती जाती है ।

हरिहर क्षेत्र : प्राचीन मंदिर समूह जिनके गर्भगृह में पंच शिवलिंग प्रतिष्ठित हैं। पुरातात्विक दृष्टि से दसवीं शताब्दी ईसवी सन में यह लोकमान्य शैव क्षेत्र था। दसवीं शताब्दी से स्थापित तीर्थ क्षेत्र के रुप में इसकी सत्ता यथावत बनी हुई है। पुरा उत्खनन से प्राप्त १० वीं ११ वीं शताब्दी के कलचुरी कालीन मंदिरों की श्रृंखला से यह मान्यता बनती है कि मण्डूक ऋषि ने यहीं पर आकर अपना आश्रम बनाया था और मंडूकोपनिषद की रचना की थी।

पुरातात्विक महत्व : 1959-60 के इंडियन एपिग्राफी प्रतिवेदन में मदकू घाट (द्वीप) से मिले दो प्राचीन शिलालेखों का उल्लेख है। प्रथम शिलालेख लगभग तीसरी सदी ईसवी का ब्राह्मी लिपि का शिलालेख है जिस में किसी अक्षय निधी का उल्लेख है।यह शिलालेख घिस गया है। दूसरा शिलालेख शंख लिपि के अक्षरों से सुसज्जित है । ये शिलालेख तत्कालीन साऊथ ईस्टर्न आर्कियोलॉजिकल मंडल कार्यालय विशाखापट्टनम में रखे गये हैं । द्वीप से प्रागैतिहासिक काल के लघु पाषाण उपकरण भी प्राप्त हुए हैं । इससे प्रमाणित होता है कि प्राचीन काल से इस द्वीप में मानव का निवास एवं संचरण होता रहा है ।

अठारह मंदिरों का समूह : सन् 2011 में हुए पुरा उत्खनन से प्राप्त 18 मंदिरों के समूह में 17 मंदिर पूर्वाभिमूख एवं एक मंदिर का द्वार पश्चिम दिशा की ओर है। एक छोटे से द्वीप में एक ही स्थान पर एक ही पंक्ति में स्थापित ा२ स्मार्त लिंग का मिलना इस स्थान के पुरा-महत्व को रेखांकित करता है। यहाँ गणेश जी, लक्ष्मीनारायण, राजपुरुषों एवं एक उमामहेश्वर की

मूर्ति भी मिली हैं। जिन-जिन राजाओं ने यहां मंदिर बनवाए उन्होंने अपनी-अपनी मूर्ति भी यहाँ बनवाई है। ये मूर्तियाँ लाल बलुवा पत्थर की हैं जो शिवनाथ नदी में मिलते हैं। इन पत्थरों पर सुन्दर बेल बूटे एवं मूर्तियां उत्कीर्ण की गयी है। यहां की सम्पूर्ण संरचना छोटे से क्षेत्र में जमीन से मात्र डेढ मीटर गहराई पर ही प्राप्त हुई है। पुरातत्विदों का कहना है कि अगर और खुदाई की जाय तो यहाँ और भी पुराने मंदिर मिलने की प्रबल संभावना है।

श्री अष्टभुजी गणेश जी का लाल बलुआ पत्थर से मंदिर का पुनर्निर्माण किया गया। जिसकी प्राण प्रतिष्ठा 2021 की महाशिवरात्रि में की गई।

भगवान राम का आगमन : ऐसा माना जाता है अपने वनवास काल के समय भगवान राम माँ सीता तथा श्री लक्ष्मण के साथ रतनपुर से शिवरीनारायण मदकू द्वीप होते हुये गये थे द्य शिवनाथ नदी यहीं से आगे जाकर शिवरीनाराण के पास महानदी में मिलती है द्य यह भी हो सकता है कि राम नदी के किनारे-किनारे शिवरी नारायन गये हों उसके बाद महानदी के साथ तुरतुरिया होते हुये राजिम की ओर गये द्य मदकूद्वीप की महत्ता को देखते हुये यह असंभव ही है कि भगवान राम इस क्षेत्र से जायें और इस पावन द्वीप में ना आयें द्य

युगल मंदिर : यहाँ दो युगल मंदिर भी मिले हैं। पहला मंदिर स्थानीय नागरिकों जिसे बना दिया गया। दूसरा मंदिर खुदाई में मिला है।

एक ही प्लेटफार्म पर जब दो मंदिर होते हैं उन्हें युगल मंदिर कहते हैं। दोनों मंदिर शिव योनी पीठ वाले हैं।

राजपुरुष की प्रतिमा : स्थापत्य एवं कला की दृष्टि से यह खंडित सिर विहीन प्रतिमा 10 वीं 11 वीं सदी ई. की प्रतीत होती है तथा मदकू द्वीप समूह के एक सुंदर स्थापत्य के रुप में इस द्वीप की राजसत्ता निर्विवाद रुप से प्रमाणित होती है।

कलचुरी कालीन हनुमान प्रतिमा शिल्प का सुंदर नमूना है। यह दसवीं ग्यारहवीं शताब्दी में निर्मित की गई है। इस द्वीप पर प्रागैहासिक काल के अवशेष से लेकर वर्तमान नवीन मंदिर समूह इस प्राचीन द्वीप की धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, पुरातातत्विक संपदा को प्रतिपादित करने के लिये पर्याप्त है।

राधा कृष्ण एवं अन्य मंदिर : लगभग सात दशक पूर्व निकटस्थ ग्राम कोटमी की बाल विधवा वृंदा बाई ने राधाकृष्ण मंदिर का निर्माण कराया। यहां निषाद एवं अन्य समाज के भी मंदिर स्थित हैं जो इस द्वीप समूह की ऐतिहासिकता एवं धार्मिक प्रासंगिकता को दर्शाते हैं।

जैव-विविधता : मदकू द्वीप अपने आप में विशिष्ट जैव विविधता समेटे हुए है। द्वीप क्षेत्र में विभिन्न प्रजाति के जैसे अंकोल, सिरहुट, वरूण, कैंवटी-जड़ी,,पुत्रजीवक, कुटज, कारी, अमलतास, कोरिया , विष्णु-जीरा आदि औषधि एवं दुर्लभ प्रजाति के पेड़-पौधे है। द्वीप क्षेत्र के बाहर उपरोक्त पेड़-पौधें नही मिलते है। द्वीप क्षेत्र में बबूल, पलाश आदि स्थानीय पेड़-पौधे नहीं पाए जाते। यह एक वानस्पतिक विशिष्टता है,जिसे संरक्षित एवं विकसित करने की आवश्यकता है।

मेला :धार्मिक आस्था के अनुरुप पौष पूर्णिमा पर एक विशाल मेला यहां प्राचीन काल से भरता चला आ रहा हैद्य श्री हरिहर क्षेत्र केदार मदकूद्वीप सेवा समिति के माध्यम से वर्ष भर विभिन्न कार्यक्रम किये जाते हैं। यहीं पर ईसाईयों ने एक चर्च बनाया है।

• महत्वपूर्ण भारतीय वाद्य वादक:

कलाकार	यंत्र
उस्ताद बिस्मिल्लाह खान	शहनाई
पंडित रवि शंकर	सितार
हरिप्रशाद चौरसिया	बांसुरी
पंडित शिवकुमार शर्मा	संतूर
उस्ताद जाकिर हुसैन	तबला
अमजद आली खान	सरोद
पंडित राम नारायण	सारंगी
उस्ताद असद अली खान	रुद्र विना
टी एच विनायकरम	घातम
रामनाद वी राघवन	मृदंगम

Awaj ki duniya

क्यों चौंकाता है पद्मनाभ स्वामी मंदिर के सातवें दरवाजे का रहस्य? दरवाजे का रहस्य

केरल में तिरुवनंतपुरम पद्मनाभ स्वामी मंदिर दुनिया के कुछ सबसे रहस्यमय जगहों में एक है। ये रहस्य है एक दरवाजे का, जिसे आज तक कोई खोल नहीं सके।

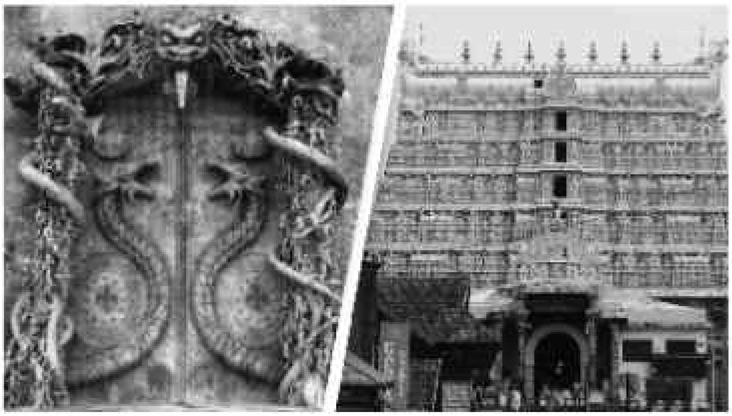

पूरी दुनिया में माना जाता है कि उसे केवल कोई सिद्धपुरुष ही खोल सकता है, लेकिन आज की तारीख में जो इसे खोल सके ऐसा कोई सिद्ध पुरुष पूरी धरती पर नहीं है। यह भी माना जाता है कि ये दरवाजा भगवान तक जाता है। आखिर क्या है इस दरवाजे का रहस्य ? क्या सचमुच इसके पीछे भगवान तक पहुंचने की रास्ता है ?

2 लाख करोड़ का सोना

इस मंदिर के गर्भ-गृह खजाने में 2 लाख करोड़ का सोना है, पर इतिहासकारों के अनुसार वास्तविकता में इसकी ये अनुमानित राशि इससे कहीं दस गुना ज्यादा होगी। इस खजाने में सोने-चांदी के महंगे चेन, हीरा, पन्ना, रूबी, दूसरे कीमती पत्थर, सोने की मूर्तियां, रूबी जैसी कई बेशकीमती चीजें हैं जिनकी असली कीमत आंकना बेहद मुश्किल है।

कलियुग के पहले दिन मंदिर की हुई थी स्थापना

मंदिर में पद्मनाभ स्वामी की मूर्ति की स्थापना कब और किसने की, इसकी कहीं कोई ठोस जानकारी नहीं है। त्रावनकोर के इतिहासकार डॉ. एल. ए. रवि वर्मा के अनुसार ये रहस्यमय मंदिर 5000 साल पहले कलियुग के पहले दिन स्थापित हुआ था।

भगवान विष्णु को समर्पित मंदिर

भगवान विष्णु को समर्पित इस मंदिर में सिर्फ हिंदू धर्म में आस्था रखने वाले ही जा सकते हैं और यहां प्रवेश के लिए एक खास वस्त्र (ड्रेस कोड) धारण करना भी जरूरी है। ये दुनिया का सबसे धनी हिंदू मंदिर है जिसमें बेशकीमती हीरे-जवाहरात जड़े हैं।

शापित दरवाजा

कुछ अन्य कहानियों के अनुसार ६वीं सदी में त्रावनकोर के महाराज ने इस मंदिर का निर्माण कराया था और अपने बेशकीमती खजाने को मंदिर के तहखाने में और मोटी दीवारों के पीछे छुपाया था। कई सौ सालों तक किसी ने इसके दरवाजे खोलने की हिमाकत नहीं की। बाद में इसे शापित माना जाने लगा।

तहखाने

मंदिर में 6 तहखाने हैं, जो शापित माने जाते हैं खासकर मंदिर का ७वां द्वार। कथाओं के अनुसार एक बार खजाने की खोज करते हुए किसी ने इसे खोलने की कोशिश की थी, लेकिन उसके अंदर से जहरीले सांप निकलने लगे और सभी मौत को प्यारे हुए।

सातवां दरवाजा खोलने की कोशिश ला सकता है प्रलय

माना जाता है तहखाना 'बी' जो इस मंदिर का सातवां द्वार भी कहा जाता है, सिर्फ कुछ मंत्रों के उच्चारण से ही खोला जा सकता है। किसी भी आधुनिक मानव- निर्मित तकनीक या दूसरे मानव-प्रयासों से खोलने या ऐसा करने की कोशिश की दिशा में मंदिर नष्ट हो सकता है और ये प्रलयकारी भी सिद्ध हो सकता है।

माना जाता है जहरीले सांपों का बसेरा

दरवाजे के पीछे के खजाने का पता लगाना भले ही मुश्किल हो, लेकिन इसके पीछे से पानी की आवाजें आती है। माना जाता है कि ये आवाजें सांपों के सरसराने की हैं। शायद बहते हुए पानी में यहां बेहद

जहरीले सांपों का निवास हो ।

20 फुट की खुदाई में मिला बेशकीमती खजानों का राज

2011 में इसका कोर्ट के आदेश पर मंदिर ट्रस्टी को शामिल करते हुए इसे खोलने के लिए 7 लोगों की कमिटी बनाई गई । कागज़ी कार्रवाई में आसानी के लिए सभी तखखानों को ए, बी, सी, डी, ई और एफ नाम दिया गया । लोहे के दरवाजों के बाद एक और भारी लकड़ी का दरवाजा खोलते हुए जमीन के अंदर 20 फुट की खुदाई कर बाकी तहखाने तो खुल गए, लेकिन बी चौंबर नहीं खुल सका ।

1,32 ,000 करोड़ के सोने और हीरे

हालांकि खोले गए तहखानों से 1,32,000 करोड़ के सोने और हीरे जैसे कीमती रत्नों के जड़ाऊ गहने, हाथी की मूर्तियां, बंदूकें आदि निकलीं। चौंकाने वाली बात ये थी कि यहां 28 किलोग्राम का एक बैग ऐसा भी था जिसमें 7 अलग-अलग देशों के राष्ट्रीय सिक्के थे, जिसमें नेपोलियन के समय के और इटालियन सिक्के भी थे ।

नहीं खुला चौंबर-बी का दरवाजा

तमाम कोशिशों के बावजूद इसका चौंबर-बी दरवाजा खोला नहीं जा सका। हाईकोर्ट की आदेश पर इसे खोलने गए इतिहासकार और न्यायाधीश के अनुसार इस पुरानी तकनीक के ताले को खोलना बेहद मुश्किल है और वो इसे तोड़ना नहीं चाहते।

बल-प्रयोग से खोलना हो सकता है विनाशकारी

चौंबर बी का ये दरवाजा स्टील का बना है जिसके द्वार पर दो बड़े कोबरा सांपों की आकृति उकेरी हुई है। इसमें कोई नट-बोल्ट या कब्जा नहीं हैं।

कौन सुलझेगा ये अबूझ पहेली?

माना जाता है कि इसे किसी सिद्ध पुरुष ने 'नाग बंधम' या 'नाग पाशम' मंत्रों का प्रयोग कर बंद किया है। इसलिए उतनी सिद्धियों के साथ ही इसे केवल 'गरुड़ मंत्र' का मंत्रोच्चार करते हुए ही खोला जा सकता है, वरना तकनीक या बल-प्रयोग से इसे खोलना विनाशकारी सिद्ध हो सकता है।

दुनिया के किसी कोने में नहीं है ये खोल सकने वाला सिद्ध पुरुष

फिलहाल भारत या दुनिया के किसी भी कोने में ऐसा सिद्ध पुरुष नहीं है। वैदिक साधना करने वाले कई साधुओं ने इसे खोलने की कोशिश की, लेकिन इसे खोल नहीं सके। इसलिए अभी तक इस मंदिर के चौंबर-बी का ये दरवाजा सबके लिए एक रहस्य बना हुआ है। इसके अंदर कितना भी बड़ा खजाना हो, या ना हो, लेकिन इतना जरूर कि ये दरवाजा भी स्वयं में ही में किसी अबूझ पहेली से कम नहीं है।

धर्मवीर भारती का उपन्यास

गुनाहों का देवता

डॉ. उर्वशी

धर्मवीर भारती का उपन्यास 'गुनाहों का देवता' हिंदी साहित्य में प्रेम के सबसे करुण, आत्मसंयमी और अंतर्द्वंद्वपूर्ण रूप का प्रतिनिधि उपन्यास है। यह उपन्यास प्रेम को किसी रोमांचक उपलब्धि या सुखांत परिणति के रूप में नहीं, बल्कि जीवन भर साथ चलने वाली पीड़ा, नैतिक द्वंद्व और आत्मसंयम की साधना के रूप में प्रस्तुत करता है। यही कारण है कि प्रकाशित होने के दशकों बाद भी यह कृति आज के पाठक को उतनी ही गहराई से छूती है, क्योंकि प्रेम की मूल पीड़ा, उसकी असमर्थता और उसकी सामाजिक सीमाएँ अब भी उतनी ही जीवित हैं।

इस उपन्यास का केंद्र चंदर और सुधा का प्रेम है-एक ऐसा प्रेम जो न तो निर्लज्ज विद्रोह करता है और न ही समाज से टकराने का साहस जुटा पाता है। चंदर आधुनिक शिक्षा से लैस, संवेदनशील और आत्मचेतस युवक है, पर निर्णय के क्षणों में वह प्रेम से अधिक समाज, नैतिकता और आत्मग्लानि के दबाव में जीता है। उसका प्रेम जितना गहरा है, उतना ही आत्मपीड़क भी। वह प्रेम करता है, पर उसे स्वीकार नहीं कर पाताय चाहता है, पर उसे पाने का नैतिक साहस नहीं जुटा पाता। चंदर का यह द्वंद्व आज के युवा प्रेमियों का भी द्वंद्व है, जहाँ भावनाएँ तीव्र हैं, पर सामाजिक स्वीकृति, करियर, परिवार और प्रतिष्ठा के प्रश्न प्रेम से भारी पड़ जाते हैं।

सुधा का चरित्र प्रेम की निष्कलुषता और त्याग का प्रतीक है। वह प्रेम को अधिकार की भाषा में नहीं, बल्कि पूर्ण विश्वास और आत्मसमर्पण की भाषा में जीती है। सुधा जानती है कि चंदर कमजोर है, फिर भी वह उसके प्रेम पर प्रश्न नहीं उठाती। उसका प्रेम किसी शर्त, अपेक्षा या भविष्य की योजना से बंधा नहीं है। सुधा का यह रूप आज के संदर्भ में और भी मार्मिक हो उठता है, जहाँ प्रेम अक्सर लेन-देन, सुरक्षा और सामाजिक लाभ की गणनाओं से घिर जाता है। सुधा का प्रेम इस गणित से परे, भावनाओं की शुद्धता का साक्ष्य है।

'गुनाहों का देवता' की सबसे बड़ी शक्ति उसका मौन प्रेम है। यहाँ प्रेम घोषणाओं, वादों या नाटकीय टकरावों से नहीं, बल्कि अधूरे संवादों, टलती हुई निगाहों, रोके गए स्पर्श और भीतर दबे आँसुओं से आकार लेता है। भारती की भाषा सहज, प्रवाहपूर्ण और अत्यंत संवेदनशील है। वे शब्दों से अधिक भावनाओं की रिक्त जगहों में प्रेम को रचते हैं। यही शैली पाठक को कहानी का दर्शक नहीं, बल्कि उसका सहभागी बना देती है।

प्रेम की प्रासंगिकता की दृष्टि से यह उपन्यास आज भी उतना ही सार्थक है, क्योंकि यह हमें प्रेम के उस पक्ष से रूबरू कराता है जिसे आधुनिक समय अक्सर अनदेखा कर देता है-प्रेम का संयम, उसकी नैतिक जिम्मेदारी और उसका त्याग। आज के समय में जहाँ प्रेम अक्सर त्वरित संतुष्टि, सोशल मीडिया की स्वीकृति और सार्वजनिक प्रदर्शन का विषय बन गया है, वहाँ 'गुनाहों का देवता' प्रेम को एक आंतरिक अनुभव के रूप में प्रतिष्ठित करता है-एक ऐसा अनुभव जो भीतर घटता है और व्यक्ति को भीतर से बदल देता है।

यह उपन्यास यह भी प्रश्न उठाता है कि क्या प्रेम का त्याग वास्तव में महानता है, या यह सामाजिक दबावों के सामने आत्मसमर्पण ? चंदर का 'देवता' होना इसी प्रश्न से जुड़ा है। वह प्रेम का गुनाह करता है, पर उसे सामाजिक मर्यादा के नाम पर दंड भी स्वयं ही देता है। इस अर्थ में उपन्यास आज के पाठक को यह सोचने के लिए विवश करता है कि हम प्रेम को कितना जीते हैं और कितना केवल सहते हैं।

'गुनाहों का देवता' प्रेम का महिमामंडन नहीं करता, बल्कि उसे उसकी पूरी करुणा, अपूर्णता और विडंबना के साथ प्रस्तुत करता है। यह उपन्यास इसलिए अमर है क्योंकि यह हमें सिखाता नहीं, बल्कि हमें महसूस कराता है कि प्रेम केवल मिलन का नाम नहीं, बल्कि कभी-कभी जीवन भर का मौन, स्मृति और पीड़ा भी होता है। यही वह सत्य है जो हर दौर में, हर पीढ़ी के प्रेम को छूता है और इस कृति को कालजयी बनाता है।

खल्लारी के पुरातात्विक ऐतिहासिक वैभव का अनुशीलन

प्रो. घनाराम साहू

13 वीं – 14 वीं सदी में कल्चुरी राजवंश का वर्तमान छत्तीसगढ़, ओडिशा और महाराष्ट्र के विशाल भूभाग पर स्वामित्व था । इस महान राजवंश का नाम धार्मिक सहिष्णुता और उदारता के लिए इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित है । इस राजवंश का मुख्यालय रतनपुर में था, जिसे राजा रतनदेव ने बसाया था । तब शिवनाथ के उत्तर में 18 और दक्षिण में 18 प्रमुख गढ़ थे ।

राय हरि ब्रह्मदेव को शिवनाथ के दक्षिणी गढ़ों का स्वामित्व मिला और उन्होंने राजधानी खालवाटिका को बनाया, जो वर्तमान में महासमुंद-बागबाहरा राजमार्ग में खल्लारी के नाम से जाना जाता है । तब यह नगर चर्मशिल्प कला उद्योग के लिए प्रसिद्ध था, जिसके अधिपति महात्मा देवापाल चर्मकार (मोची) थे, जो नारायण (विष्णु) के भक्त थे । उन्होंने अपने इष्टदेव के लिए पहाड़ी की तलहटी में भव्य मंदिर का निर्माण कराया था ।

जनश्रुति है कि इस मंदिर के लोकार्पण अवसर पर राजा राय हरि ब्रह्म देव उपस्थित थे और उनके पुरोहित दामोदर मिश्र ने महात्मा देवपाल की पुण्य कार्यों के लिए प्रशस्ति लिखी, जिसमें उनके तीन पीढ़ियों के पुण्य प्रताप का सुंदर चित्रण है । यह शिलालेख वर्तमान में रायपुर के महंत घासीदास संग्रहालय में सुरक्षित है ।

वर्तमान में महात्मा देवपाल द्वारा निर्मित नारायण मंदिर का ढांचा सुरक्षित है, लेकिन नारायण की प्रतिमा नहीं है और उनके स्थान पर भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा की प्रतिमाएं विराजित हैं, इसलिए इसे जगन्नाथ मंदिर के नाम से जाना जाता है । इस मंदिर के पुरातत्व और इतिहास का दस्तावेजीकरण भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के डॉ. जे. डी. बेगलर ने सन 1871–72 में किया था, तथा शिलालेख का पठन एवं अनुवाद डॉ. किलहॉर्न ने किया है । शिलालेख के अनुसार, इस मंदिर का लोकार्पण ईसवी सन 1413 में माघ शुक्ल पक्ष अष्टमी तिथि को हुआ था ।

महात्मा देवपाल मोची के पुण्य स्मरण में सन 2016 से निरंतर सामाजिक समरसता गोष्ठी का आयोजन किया जाता है, जिसमें प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता स्व. प्रो. जीता मित्र सिंहदेव, प्रो. लक्ष्मी शंकर निगम, आचार्य रमेंद्रनाथ मिश्र, साहित्यकार गिरीश पंकज, स्व. आशीष सिंह, प्रो. मुकुंद हम्बर्डे प्रभृति विद्वानों की सहभागिता रही है ।

कोरबा का रहस्यमयी भटगांव जहां घरों के दरवाजे सामने नहीं खुलते

कोरबा मुख्यालय से करीब 25 किलोमीटर दूर स्थित भटगांव आज भी एक अनोखी पहचान के साथ जाना जाता है। यह गांव किसी आधुनिक वास्तुशास्त्र से नहीं, बल्कि सदियों पुराने डर, लोककथाओं और अनुभवों से गढ़ा गया है। यहां की गलियों से गुजरते ही पहली नजर में ही कुछ अलग सा महसूस होता है क्योंकि अधिकांश पुराने मकानों में सामने की ओर कोई दरवाजा ही नहीं दिखाई देता।

गांव के बुजुर्ग बताते हैं कि यह परंपरा कोई शौक नहीं बल्कि मजबूरी से जन्मी थी। करीब डेढ़ सौ साल पहले गांव में अदृश्य शक्तियों और जंगली जानवरों का खौफ फैला हुआ था। शाम ढलते ही जंगल से निकलकर हिंसक जानवर गांव में घुस आते थे तो वहीं लोगों का विश्वास था कि प्रेत आत्माएं घरों में प्रवेश कर उत्पात मचाती थीं। डर इतना गहरा था कि ग्रामीणों ने सामूहिक बैठक कर एक बड़ा फैसला लिया अब से हर घर का दरवाजा पीछे की ओर ही बनाया जाएगा।

इस फैसले के बाद लोगों को मानसिक सुकून मिला। धीरे-धीरे यह परंपरा गांव की पहचान बन गई। दशकों पुराने कच्चे मकान आज भी उसी बनावट के साथ खड़े हैं, जिनके सामने की दीवारें बिना दरवाजे के रहस्य बयां करती हैं। न दरवाजे, न नेम प्लेट बस खामोश दीवारें और उनके पीछे छिपी कहानियां।

आज भले ही नई पीढ़ी शहरी शैली में मकान बनवा रही हो, लेकिन पुराने लोग अब भी उस अनदेखे डर से पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाए हैं। उनका मानना है कि परंपरा से हटना अनहोनी को बुलावा देना है।

भटगांव के आगे प्रसिद्ध परसाखोला पिकनिक स्पॉट स्थित है, जहां जाने वाले पर्यटक इसी रास्ते से गुजरते हैं। गांव की गलियों से गुजरते वक्त मकानों की अनोखी बनावट उन्हें हैरान कर देती है। कई लोग रुककर पूछते हैं ''यहां घरों के दरवाजे सामने क्यों नहीं हैं ?'' और यहीं से भटगांव की रहस्यमयी कहानी एक बार फिर जिंदा हो उठती है।

भले ही आज विज्ञान और आधुनिक सोच इन मान्यताओं को चुनौती देती हो, लेकिन भटगांव की यह परंपरा अब भी लोगों की जिज्ञासा, रोमांच और रहस्य का केंद्र बनी हुई है। यह गांव केवल एक बस्ती नहीं, बल्कि डर, विश्वास और इतिहास की ऐसी कहानी है, जो हर गुजरने वाले को सोचने पर मजबूर कर देती है, क्या सच में कभी यहां अदृश्य शक्तियों का साया था, या यह सिर्फ पीढ़ियों से चला आ रहा एक डर है, जो आज भी दीवारों में कैद है?

स्त्रियों के ललाट में लगा सिंदूर, शुभता, शुचिता, एकता का परिचायक

मैं स्त्रियों के ललाट के सिंदूर को देख कर ही अनुमान करता हूं कि कितनी यह संगठित हैं। हमारे घर की यह देवियां सिंदूर लगाये हुए यह संकेत देती हैं कि हम संगठित हैं। एक-एक मिलकर दो नहीं बल्कि ग्यारह हो गयी हैं। यही तो है पहचान, जिनके सिर पर सिंदूर नहीं लगा वह तो बराबर ऐसे ही सभी के लिए हैं। सबकी प्रिय हैं। पर जो सिंदूर लगाती हैं, कुल-वधु हैं, उन्हें देखने से यह मालूम होता है कि कुल देवी हैं, प्रणम्य हैं। इन्हें प्रणाम व्यक्त करना, मन ही मन श्रद्धा व्यक्त करना यही सब तो देवी का पूजन, अर्चना है। साधना का एक यह भी मार्ग है। अगर सिंदूर लगाये हुए, सिर पर आंचल रखे हुए, आपको बंधुओं ये प्रसन्न मुद्रा में दिख जाये तो समझ लेना, आपकी मनोकामना अवश्य पूर्ण होने वाली है।

परम् पूज्य बाबा श्री अघोरेश्वर भगवान राम जी

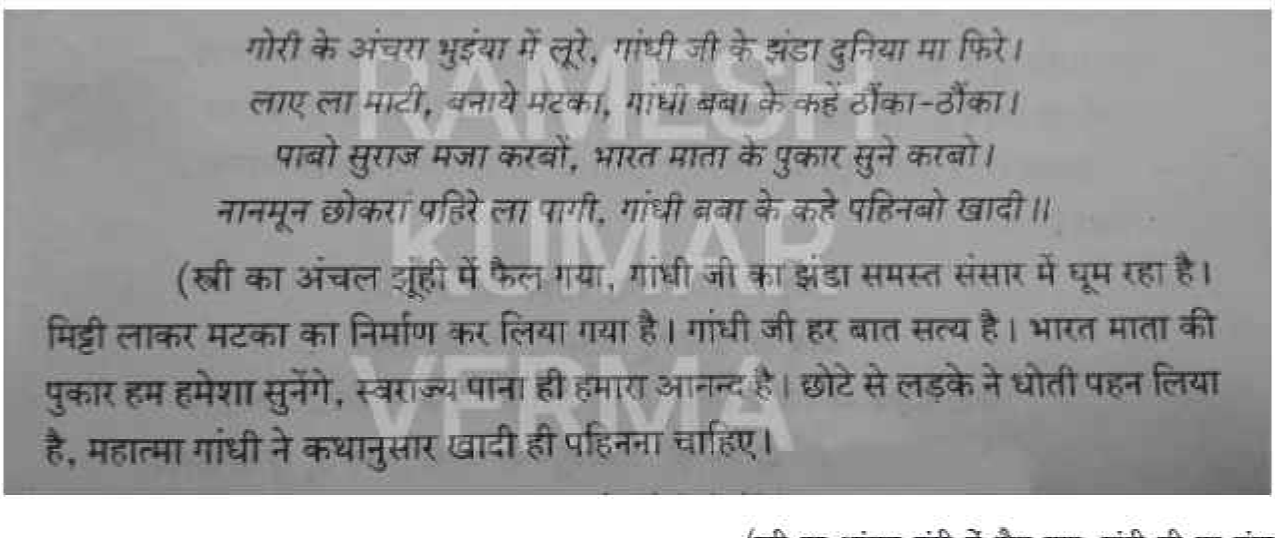

गोरी के अंचरा भुइंया में लूरे, गांधी जी के झंडा दुनिया मा फिरे।
लाए ला माटी, बनाये मटका, गांधी बबा के कहें ठौंका-ठौंका।
पाबो सुराज मजा करबो, भारत माता के पुकार सुने करबो।
नानमून छोकरा पहिरे ला पागी, गांधी बबा के कहे पहिनबो खादी ।।

(स्त्री का अंचल झूंही में फैल गया, गांधी जी का झंडा समस्त संसार में घूम रहा है। मिट्टी लाकर मटका का निर्माण कर लिया गया है। गांधी जी हर बात सत्य है। भारत माता की पुकार हम हमेशा सुनेंगे, स्वराज्य पाना ही हमारा आनन्द है। छोटे से लड़के ने धोती पहन लिया है, महात्मा गांधी ने कथानुसार खादी ही पहिनना चाहिए।

RAMESH KUMAR VERMA

गोरी के अंचरा भुइंया में लूरे, गांधी जी के झंडा दुनिया मा किंरे।
लाए ला माटी, बनाये मटका, गांधी बबा के कहें ठौंका-ठौंका।
पाबो सुराज मजा करबों, भारत माता के पुकार सुने करबो।
नानमून छोकरा पहिरे ला पागी, गांधी बबा के कहे पहिनबो खादी ।।

(स्त्री का आंचल झूंही में फैल गया, गांधी जी का झंडा समस्त संसार में घूम रहा है। मिट्टी लाकर मटका का निर्माण कर लिया गया है। गांधी जी की हर बात सत्य है। भारम माता की पुकार हम हमेशा सुनेंगे, स्वराज्य पाना ही हमारा आनन्द है। छोटे से लड़के ने धोती पहल लिया है, महात्मा गांधी के कथानुसार खादी ही पहिनना चाहिए।)

साभार : रमेश कुमार वर्मा

न एलोपैथी, न होमियोपैथी, दुनिया को चाहिए सिम्पैथी

इस बच्ची को कुत्तों, बकरियों, भेड़ों और गायों से बहुत प्रेम है। उनके साथ इसके सहज संबंध बन जाते हैं । राह चलते हुए उन्हें भोजन कराना, उन्हें प्रेम देना इसे अच्छा लगता है ।

गाँव में मुक्त होकर विचरण करनेवाले किसी आजाद कुत्ते ने इसपर कभी भौंका तक नहीं है । लेकिन अभी दो-दिन पहले किसी ग्रामीण के घर जंजीर में बंधे किसी 'पालतू' कुत्ते ने इसपर अचानक हमला कर इसे काट लिया ।

यह बहुत रोई । काटने के जख्म से उतना दर्द नहीं हुआ। हृदय की पीड़ा से रोना आया ।

भोलेपन से पूछा – बाबा, मैंने तो उसे बिल्कुल भी नहीं सताया था, फिर उसने अकारण ही मुझे क्यों काटा होगा ? वह भी इतना उत्तेजित होकर ?

मैंने पूछा – क्या तुम्हें उस कुत्ते के प्रति गुस्सा आया ? उससे डर लगा ? उसके प्रति घृणा पैदा हुई ?

इसने कहा – 'नहीं ।'

मैंने फिर पूछा – 'पक्का ? जरा-सा भी नहीं ?'

इसने कहा – 'नहीं । मुझे तो उस बेचारे पर दया ही आई । वह छोटी-सी जंजीर में बंधा था । छूटने की कोशिश कर रहा था। बहुत परेशान था। दुःखी था ।'

फिर अचानक ही अपना रोना भूलते हुए इसने कहा – 'ओहो ! बाबा, शायद इसीलिए उसने मुझे काटा होगा । वह बहुत दुःखी था, परेशान था। और इसीलिए बहुत गुस्से में था ।'

मुझे भी याद आया कि जब मैंने उस कुत्ते को बाद में देखा था तो मुझे उसके प्रति बहुत-ही करुणा पैदा हुई थी । उसकी आँखों में एक बेचारगी थी। बहुत तनाव था उसके चेहरे पर । आक्रामकता तो बस उसकी अभिव्यक्ति मात्र थी ।

इस घटना में बहुत-से सबक इंसानी समाज के लिए भी हैं । जैसे, दूसरों को डराने के लिए सप्रयास हिंसक बनाए गए कुत्ते न पालें । पालने का शौक ही हो तो उसे शुरू से ही सबसे घुलना-मिलना सिखाएँ । जंजीर या किसी भी प्रकार के बंधन से मुक्त रखें । इसे अपने स्टेटस या दिखावे से न जोड़ें ।

कुत्ते, बिल्लियों जैसे प्राणियों का व्यावसायिक-प्रजनन और उत्पादन मादा-प्राणियों के लिए भयंकर कष्टकारी होता है । इसके अलावा जब हम इन्हें वृद्ध और बीमारी की अवस्था में अनाथ छोड़ आते हैं, तो वह भी इनके लिए बहुत पीड़ादायी होता है ।

आक्रामकता इंसानों की हो या कुत्तों की, वह दुःख, कुंठा, भय, असुरक्षा, तनाव, अवसाद, घुटन आदि मनोजन्य परिस्थितियों की वजह से ही पैदा होती है । हम उसे पागलपन, वहशीपना आदि कहते हैं, लेकिन उस पागलपन के पीछे मानवजन्य पारिवारिक और सामाजिक परिस्थितियाँ होती हैं ।

यह बच्ची जब गाँव के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में 'एंटी-रेबीज वैक्सीन या आलर्क निरोधी टीका' लेने जा रही थी, तब भी रास्ते भर मुक्त विचरण करनेवाले श्वान-सखाओं को खिलाते और दुलारते ही गई ।

भारत के एक अर्वाचीन संत ने कहा थाः 'दुनिया का इलाज न एलोपैथी से होगा, न होमियोपैथी से। दुनिया का इलाज होगा सिम्पैथी और एम्पैथी से।'

तो वह सहानुभूति और समानुभूति हम सबमें सर्वरूपेण पैदा हो, यही अभ्यर्थना !

ऐसे मंदिर जहां साल में एक बार पड़ती है सूर्य की किरणें

१. नागालपुरम वेदनारायण स्वामी मंदिर
२. कोल्लापुर लक्ष्मी मंदिर। ३. बेंगलुरु गवी गंगाधर मंदिर।
४. अरसावेल्ली सूर्य नारायण मंदिर। ५. मोगिलेश्वर ।
६. कोडंडारामा मंदिर, कडप्पा जिला।
७. सूर्यनारायण मंदिर, जोगुलाम्बा, आलमपुर, गडवाल जिला

ऐसे मंदिर जहां लगातार बहता है पानी :

१. महानंदी २. जंबुकेश्वर ३. बुग्गरामलिंगेश्वर
४. कर्नाटक कमंडल गणपति।
५. हैदराबाद काशी बुग्गा शिव मंदिर।
६. बेंगलुरु मल्लेश्वर
७. राजराजेश्वर बेल्लमपल्ली शिव मंदिर
८. सिद्धगंगा ९. आलमपुर

मंदिर जो ज्वाला रूप में कराते हैं दर्शन :

१. ज्वालामुखी, जो ज्वाला जैसी ज्वाला है।
२. अरुणाचलेश्वर, जो निरंतर जलता रहता है, ३. मंजूनाथ।

मनमोहक कालहस्तीश्वर

समुद्र स्वयं पीछे हट जाता है :

१. गुजरात निष्कलंक महादेव
२. पुंगनूर शिव मंदिर, जहाँ 40 वर्षों में एक बार समुद्र जल पूजा की जाती है।

स्त्री की तरह मासिक धर्म :

१. असम कामाख्या अम्मावरु २. केरल दुर्गा माता।

ब्रह्मा नाम के एकमात्र शिव मंदिर

आलमपुर में नवम ब्रह्मेश्वर मंदिर, शिवलिंग के 9 रूप हैं

रंग बदलने वाले मंदिर :

१. तमिलनाडु का अतिशय विनायक मंदिर, जो उत्तरायण और दक्षिणायन में रंग बदलता है।

२. पूर्णिमा पर सफेद और अमावस्या पर काला हो जाने वाला शिव मंदिर पश्चिम गोदावरी जिले में स्थित भीमावरम सोमेश्वर स्वामी मंदिर है । यहीं पर शिव गंगा का जल गुण-दोष के अनुसार बदलता है और घी मक्खन में बदल जाता है।

लगातार बढ़ती रहने वाली मूर्तियाँ

१. कनिपकम, २. यागंती बसवन्ना,
३. काशी तिलभांडेश्वर, ४. बैंगलोर बसवेश्वर
५. बिक्कवोलु लक्ष्मी गणपति

स्वयंभुव

अमरनाथ जो साल में एक बार जगमगाता है।
छह महीने में एक बार खुलता है
१. बद्रीनाथ,
२. केदारनाथ (छह महीने बाद भी दीप जलता रहता है)
३. गुह्यकाली मंदिर।

साल में एक बार खुलने वाले मंदिर

हसम्बा मंदिर, हासन, कर्नाटक । एक साल बाद चढ़ाया जाने वाला अन्न प्रसाद अक्षुण्ण रहता है।

12 साल में एक बार

बिजली महादेव, हिमाचल प्रदेश, जिस पर बिजली गिरती है और वह फिर से चिपक जाता है।

खुद प्रसाद खाता है

१. केरल श्री कृष्ण मंदिर।
२. वृंदावन राधाकृष्ण शयन मंदिर

एकल स्तंभ वाला

पुणे केदारेश्वर, जो युग के अंत का प्रतीक है, यहाँ का जल भीषण गर्मी में भी ठंडा रहता है।

रूप बदलते हैं

उत्तराखंड की दारी देवी, जो एक दिन में तीन रूप बदलती हैं।

जल से दीपक जलाते हुए घड़िया घाट माताजी मंदिर, मध्यप्रदेश

देवी ने पुजारी को स्वप्न में दर्शन दिए और कहा कि अब से जल से दीपक जलाओ, और यह आज भी हो रहा है ।

भाजपा सरकार में अफसरशाही, भ्रष्टाचार और अव्यवस्था से जूझ रहे मुख्यमंत्री

छत्तीसगढ़ में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बने दो साल से अधिक समय बीत चुका है । जनता ने बड़ी उम्मीदों और भरोसे से भाजपा को सत्ता सौंपी थी । पर बहुत कुछ गड़बड़ झाला नज़र आ रहा है । ना सिर्फ कार्यकर्ता, आम जनता में भी नाराज़गी स्पष्ट है । इस बात में कोई दो राय नहीं है किअफसरशाही पूरी तरह से हावी है । भ्रष्टाचार अपने चरम पर है ।

भाजपा को सत्ता दिलाने में कार्यकर्ताओं ने दिन-रात मेहनत की, वे सभी घोर उपेक्षित हैं । कहीं कोई सुनवाई नहीं । अफसरों के सामने कार्यकर्ता ही नहीं, बल्कि विधायक और मंत्री तक बेबस नजर आते हैं ।

अनुभवहीन और पहली बार मंत्री बने चेहरों के पास प्रशासन को दिशा देने साहस है । आज के नये विधायकों/मंत्री इस बात से ही खुश हैं कि कम से कम जीते कर सत्ता का आनंद तो पा रहे हैं । इसी बात का फायदा उठाते हुए, अधिकारी मनमानी कर रहे हैं और नेताओं, विधायकों और मंत्रियों की बातों को सीधे नकार देते हैं । अधिकारियों के इस रवैय्ये से सरकार की छवि धूमिल हो रही है ।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय पर सवाल

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व को लेकर भी कई सवाल उठ रहे हैं । कहा जा रहा है कि मुख्यमंत्री सरल और सीधे हैं, लेकिन कुछ अधिकारी गलत चित्रण कर उन्हें गुमराह कर रहे हैं । इन अधिकारियों की, मुख्यमंत्री निवास और मंत्रालय में मजबूत पकड़ बनी हुई है और उनकी सहमति के बिना पत्ता भी नहीं हिलता है ।

बड़े स्तर पर कमीशनखोरी और भ्रष्टाचार का खेल चल रहा है । हर विभाग में मनमाने तरीके से निर्णय लिए जा रहे हैं। कलेक्टर स्तर से लेकर छोटे अधिकारी तक, अधिकांश काम पैसों के दम पर ही निपटाए जा रहे हैं ।

प्रदेश की जनता ने कांग्रेस की भूपेश बघेल सरकार को भ्रष्टाचार के कारण सत्ता से बाहर किया था । उस समय यह कहा जा रहा था कि कांग्रेस को बहुमत मिला था और वह 15 साल का कार्यकाल आसानी से पूरा कर सकती थी । लेकिन अफसरशाही और भ्रष्टाचार के बोझ ने कांग्रेस को पांच साल में ही बाहर का रास्ता दिखा दिया ।

अब जनता का आरोप है कि भाजपा सरकार में कांग्रेस से भी पाँच गुना ज्यादा भ्रष्टाचार हो रहा है। छोटे-छोटे कामों

मानव शरीर जैसे दिखने वाले मंदिर

१. हेमचल नरसिंह स्वामी।

२. श्रीशैलम में इष्टकामेश्वरी देवी

३. बृहदेश्वर मंदिर

पानी में तैरते विष्णु (हजारों टन वजन), नेपाल

पनाकला नरसिंह स्वामी, जो मानव की तरह औषधि पीते हैं।

यमुनेत्री, जहाँ पानी चावल पकाने के लिए पर्याप्त गर्म है।

छाया विशेषता

१. छाया सोमेश्वरम, स्तंभ पर छाया है।

२. हम्पी विरुपाक्षेश्वर, गोपुरम की छाया उल्टे क्रम में पड़ती है।

पुरी

पुरी जहाँ पक्षी नहीं उड़ते, पुरी जहाँ समुद्र की आवाज नहीं सुनाई देती, पुरी जहाँ हवा समुद्र की ओर बहती है, पुरी जहाँ गोपुरम की छाया नहीं पड़ती, पुरी जहाँ भगवान को चढ़ाए जाने वाले प्रसाद से आवाज आती है।

ये कुछ प्रसिद्ध मंदिर हैं। 'ऐसे मंदिरों का निर्माण विश्वकर्मा ने किया था

के लिए भी जनता को अफसरों की चौखट पर पैसा चढ़ाना पड़ रहा है। लोगों का कहना है कि यदि आज चुनाव हो जाएं तो भाजपा को १० सीटें जीतना भी मुश्किल हो सकता है।

पत्रकारों में भी असंतोष

पत्रकार जगत में भी सरकार को लेकर गहरी नाराजगी है। संवाद और समन्वय की कमी साफ नजर आ रही है। मुख्यमंत्री निवास से जुड़े जनसंपर्क विभाग के कुछ बड़े अधिकारी अपनी मनमानी कर रहे हैं। पत्रकारों की बातों को न केवल नजरअंदाज किया जा रहा है, बल्कि जो पत्रकार सरकार की गलतियों को उजागर करने की कोशिश करते हैं, उन्हें किनारे कर दिया जाता है।

सोशल मीडिया पर लगातार जनसंपर्क विभाग और उसके प्रमुख अधिकारियों की कार्यशैली को लेकर आलोचना हो रही है। पत्रकारों का मानना है कि यदि सरकार और मीडिया के बीच संवादहीनता बढ़ी तो जनता तक सही संदेश पहुंचना मुश्किल हो जाएगा और सरकार की छवि और भी खराब होगी।

मंत्रालय और विभागों में अफसरों की पकड़

मंत्रालय से लेकर इंद्रावती और महानदी भवन तक, हर जगह अफसरशाही का दबदबा साफ झलकता है। अधिकारी अपनी मर्जी से फैसले ले रहे हैं और मंत्रियों को भी दरकिनार किया जा रहा है। आरोप है कि कई विभागों में तो अफसरों ने कमीशन की दरें तक तय कर दी हैं।

पटवारी, तहसीलदार से लेकर कलेक्टर तक, हर स्तर पर भ्रष्टाचार की शिकायतें बढ़ रही हैं। आम जनता को किसी भी काम के लिए अफसरों की जेब भरनी पड़ रही है। यह स्थिति भाजपा की उस छवि के बिल्कुल विपरीत है जो उसने चुनाव प्रचार के दौरान जनता के सामने प्रस्तुत की थी।

सबसे बड़ा सवाल भाजपा के शीर्ष नेतृत्व को लेकर खड़ा हो रहा है। आखिर क्यों राष्ट्रीय और प्रदेश स्तर के बड़े नेताओं की नजर इस गंभीर समस्या पर नहीं पड़ रही? कार्यकर्ताओं और जनता की नाराजगी अगर इसी तरह बढ़ती रही, तो आने वाले समय में भाजपा के लिए सत्ता बचाना बेहद कठिन हो जाएगा।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यदि समय रहते मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय और उनकी टीम ने इस स्थिति पर काबू नहीं पाया, तो भाजपा को २०२८ में जनता का भरोसा खोना पड़ सकता है। विपक्ष में बैठी कांग्रेस को कोई मेहनत करने की जरूरत नहीं होगी, जनता खुद ही भाजपा से नाराज होकर कांग्रेस को सत्ता सौंप देगी।

छत्तीसगढ़ की मौजूदा तस्वीर चिंता बढ़ाने वाली है। जनता त्राहिमाम कर रही है, कार्यकर्ता उपेक्षित महसूस कर रहे हैं, पत्रकार असंतुष्ट हैं और अफसरशाही बेलगाम हो चुकी है। भाजपा ने जिस विश्वास और पारदर्शिता की बात कहकर जनता से वोट मांगे थे, वह वादे कहीं खोते नजर आ रहे हैं।

अगर भाजपा नेतृत्व ने समय रहते सख्त कदम नहीं उठाए, भ्रष्ट अधिकारियों पर नकेल नहीं कसी और अनुभवी नेताओं को आगे नहीं लाया, तो यह सरकार भी कांग्रेस की तरह भ्रष्टाचार के बोझ तले दबकर गिर सकती है। आने वाले समय में छत्तीसगढ़ की राजनीति का भविष्य इसी बात पर निर्भर करेगा कि भाजपा अफसरशाही को नियंत्रित कर पाती है या नही ।

ओम सोनी,
दंतेवाड़ा

छत्तीसगढ़ का चेंदरू – 'द टाईगर बॉय' का स्मरण

शकुंतला दुष्यंत के पुत्र भरत बाल्यकाल में शेरों के साथ खेला करते थे वैसे ही बस्तर का यह लड़का शेरों के साथ खेलता था। इस लड़के का नाम था चेंदरू। "चेंदरू द टायगर बाय" के नाम से मशहुर चेंदरू पूरी दुनिया के लिये किसी अजुबे से कम नही था। बस्तर मोगली नाम से चर्चित चेंदरू पूरी दुनिया में 60 के दशक में बेहद ही मशहुर था।

चेंदरू मंडावी नारायणपुर के गढ़ बेंगाल का रहने वाला था। मुरिया जनजाति का यह लड़का बड़ा ही बहादुर था। बचपन में इसके दादा ने जंगल से शेर के शावक को लाकर इसे दे दिया था। चेंदरू ने उसका नाम टेंबू रखा था। इन दोनो की पक्की दोस्ती थी।

दोनो साथ मे ही खाते, घुमते और खेलते थे। इन दोनो की दोस्ती की जानकारी धीरे धीरे पूरी दुनिया में फैल गयी। स्वीडन के ऑस्कर विनर फिल्म डायरेक्टर आर्ने सक्सडॉर्फ चेंदरू पर फिल्म बनाने की सोची और पूरी तैयारी के साथ बस्तर पहुंच गए।

उन्होंने चेंदरू को ही फिल्म के हीरो का रोल दिया और यहां रहकर दो साल में शूटिंग पूरी की। 1957 में फिल्म रिलीज हुई "एन द जंगल सागा" जिसे इंग्लिश में 'दि फ्लूट एंड दि एरो' के नाम से जारी किया गया।

फिल्म के रिलीज होने के बाद चेंदरू को भी स्वीडन और बाकी देशों में ले जाया गया। उस दौरान वह महीनों विदेश में रहा। चेंदरू को आर्ने सक्सडॉर्फ गोद लेना चाहते थे लेकिन उनकी पत्नी एस्ट्रीड से उनका तलाक हो जाने के कारण ऐसा हो नहीं पाया। एस्ट्रीड एक सफल फोटोग्राफर थी। फिल्म शूटिंग के समय उन्होंने चेंदरू की कई तस्वीरें खीची और एक किताब भी प्रकाशित की – 'चेंदरू द बॉय एंड द टाइगर'।

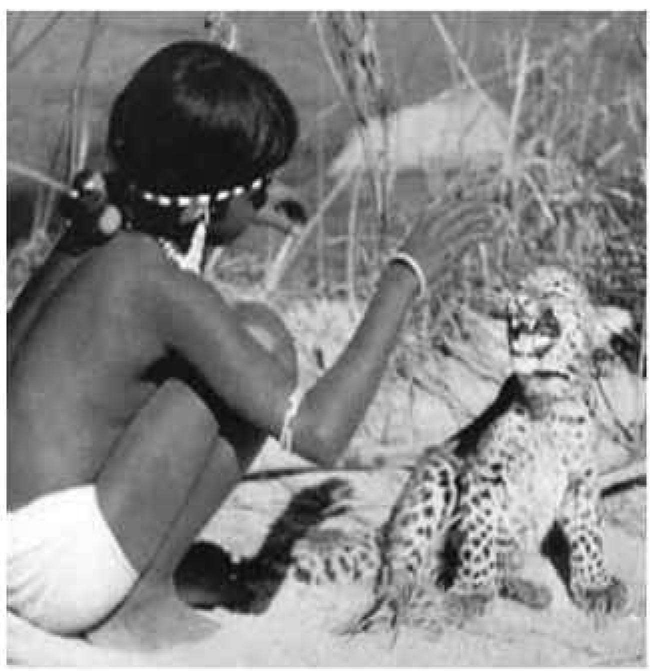

बहादुर कलारिन की मांची : अनजाना अतीत

डॉ. प्रकाश पतंगीवार

बालोद जिले के गुरूर तहसील के अंतर्गत बसा सोरर ग्राम अपने ऐतिहासिक धरोहरों के लिए विख्यात है। यहां १० किमी. की परिधि के भीतर चप्पे-चप्पे में पुराअवषेश बिखरे हुए हैं। यहीं स्थित हैं, बहादुर कलारिन की मांची, इसके अलावा भाठापारा में दो सैनिक प्रतिमायें, चिरचारी में ठकुराईन की प्रतिमा, खंडहर के रूप में विद्यमान रनिवास और करकाभाट के शिला स्मारक यह आभास कराते हैं कि कभी सोरर कला वैभव संपन्न रहा होगा। वैसे भी प्रकृति ने सोरर को विविध अलंकरण प्रदान किये हैं। यहां की भौगोलिक स्थिति, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और सांस्कृतिक विरासत स्वयं इस बात की पुष्टि करते हैं।

करहीभदर से 3 किमी. दूर स्थित सोरर, नवापारा, चिरचारी और भाठापारा गांव आपस में जुड़े हुए हैं। सोरर ग्राम में स्थित बहादुर कलारिन की मांची को कुछ इतिहासकारों ने प्राचीन मंदिर की संज्ञा दी है। लेकिन क्षेत्रीय जन इसे मांची के रूप में ही जानते हैं। मंदिर (मांची) के मंडल का भाग छोड़कर बाकी पूरा निर्माण ध्वस्त हो चुका है। मांची के रूप में बचे अवषेश को देखने पर पुष्टि होती है कि यह धरोहर 13वीं-14वीं शताब्दी की स्थापत्य कला का नमूना है। इतिहासकार डॉ. जे.डी. वेगलर ने इसको एक राजा का घर बताया है। उनका कहना है कि एक अत्यंत साधारण व्यक्ति यहां शराब बेचा करता था। धीरे-धीरे कर वह इतना धनी हो गया कि सोरर का राजा बन बैठा।

इतिहास के पन्ने पलटे, तो और भी रहस्य उजागर होते हैं। बहादुर कलारिन की यह मांची दक्षिण भारत के मंदिरों के स्थापत्य कला से समानता रखती है। दक्षिण के राजा आक्रमणकारियों से तंग आकर ऐसे भवन या मंदिर निर्माण करते थे, जिसे युद्ध के बाद दूसरे स्थान पर स्थानांतरित किया जा सके। ऐसे निर्माण शैली को मीना पक्कम शैली कहा जाता है। इसमें मिट्टी, गारा, सीमेंट या कां क्रीट का कतई उपयोग नहीं किया जाता था। बल्कि विषाल पत्थरों में खांचे बनाकर स्तंभों को जोड़ दिया जाता था। सूक्ष्म अवलोकन करने पर सोरर की मांची भी ऐसे निर्माण कला का प्रत्यक्ष उदाहरण है। ऐसा लगता है, जैसे स्तंभ, छत से केवल टिके हुए हैं। सोरर की मांची के छः स्तंभ, अभी तक ज्यों के त्यों खड़े हैं।

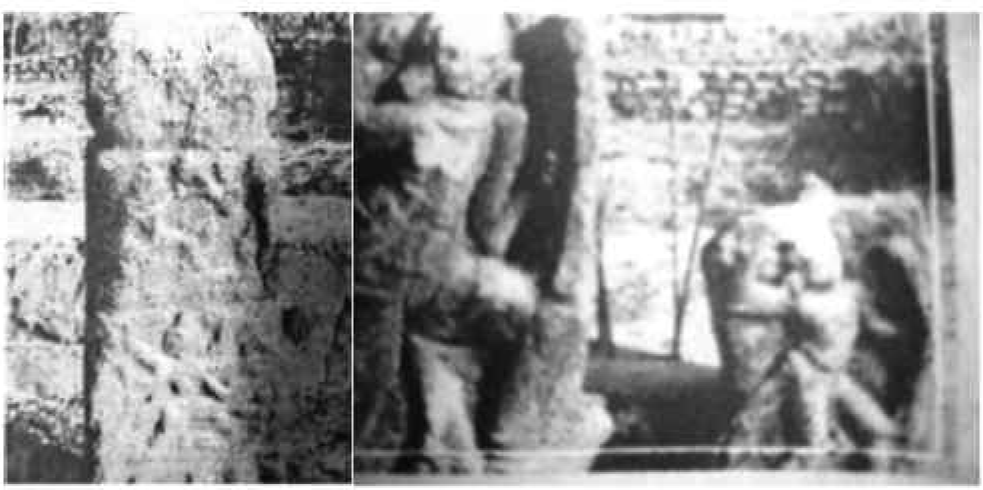

मांची की छत एक विषाल आयाताकार पत्थरों से निर्मित है। इनमें से एक छत में दरार आ गई है, जिसे सातवें स्तंभ पर टिकाया गया है। मंडल के स्तंभों से जुड परिसर को अब भी देखा जा सकता है।

पूजनीय है बहादुर कलारिन और छछानछाडू –

बावली का खंडहरनुमा स्थल आज देवस्थल बन गया है। यहां बहादुर कलारिन के बेटे छछानछाडू की देवता के रूप में पूजा अर्चना की जाती है। बहादुर कलारिन का क्या हुआ ? इस बारें में विभिन्न मत है। कहा जाता है कि उसने बावली में कूदकर अपने प्राण त्याग दिये। यहां बिखरी 20–25 मूर्तियां और एकमात्र पाशाण स्तंभ पर दासियों का चित्रांकण छछानछाडू द्वारा दासियों को कैद रखे जाने की पुष्टि जरूर करती है।

भाठापारा और सोरर में प्राप्त प्रतिमायें ग्रेनाईट पत्थर की है। मूर्तियों के कानों में कुण्डल और गले में हार है। चिरचारी की एक मूर्ति को ठकुराईन कहा जाता है। असल में यह महिशासुर मर्दिनी की प्रतिमा है। अनुमान है कि गणेष और चामुण्डा की ये खंडित प्रतिमायें पहले मांची (मंदिर) में रही होगी। समय के साथ-साथ वे यत्र-तत्र बिखर गई। सोरर में प्रवेष करते ही दो बड़े टीले दिखाई देते हैं। लगता है कि मानों ये प्रवेशद्वार हों। इन टीलों के भीतर भी प्राचीन अवषेश होने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता। अब इन टीलों पर दोनों ओर स्कूल खु्ल गये हैं। सोरर के बारे में विद्वानों की राय भी अलग-अलग है। कोई कहता है कि पहले यह वैभ्राजक वन कहलाता था और यहां सरहरगढ़ स्थापित था। कुछ विद्वानों ने इसे दक्ष प्रजापति का यज्ञ स्थल निरूपित किया है। किसी ने इसे वरूण देव की राजधानी कहा है।

प्रतिकूल मौसम ने यहां की मूर्तियों और मंदिर को भले ही ध्वस्त कर दिया हो, पर अकेली बहादुर कलारिन की मांची फिर भी सिर ताने खड़ी हुई है। यदि पुरातात्विक अवषेशों को प्रमाण माने, तो सोरर में दो प्रकार के ऐतिहासिक तथ्यों का पता चलता है। प्रथम, यह कि पहले यहां प्राचीन मंदिर था जैसा कि पुरातात्वविदों ने कहा है। दूसरी बात यह कि कालांतर में मंदिर ध्वस्त हो जाने से बचा हिस्सा मांची के रूप में प्रसिद्ध हुआ। सोरर गांव के एक विषेश भू-भाग को रनिवास भी कहा जाता है, परंतु रनिवास होने का कोई साक्ष्य विद्यमान नहीं है। शोध के अभाव में सोरर का प्राचीन वैभव इतिहास पर्यटकों के सामने कई प्रश्न उपस्थित करता है। मांची के आसपास खोदाई करने पर ही नई तथ्य उजागर होंगे।

जनश्रुति : मांची की इस धरोहर को बहादुर कलारिन नाम की एक सुंदर स्त्री से जोड़ा जाता है। कहते हैं यह स्त्री मांची पर बैठकर यहां शराब बेचा करती थी। बहादुर कलारिन की कौटुविक जानकारी नही मिलती, पर यह बात जन सामान्य में प्रचलित है कि किसी राजा के साथ उसका गंधर्व विवाह हुआ था और छछानछाडू नामक बेटा था। छछानछाडू युवा होने पर अत्याचार करने लगा। अपुष्ट प्रमाण मिलते हैं कि छछानछाडू एकछत्र राजा भी हुआ। वह राजघराने की राजकुमारियों को सोरर में लाकर उन्हें कैद करके क्रूर यातनायें दिया करता। कहा जाता है कि छछानछाडू ने सात आगर सात कोरी 147 युवतियों को कैद किया था। उनके लिए 147 ओखलियां बनाई और अनाज कूटने की सजा दी गई। ओखलियों के गढ्ढे आज भी सोरर में यत्र-तत्र अस्पष्ट रूप में दिखाई देते हैं। बहादुर कलारिन चाहती थी कि बेटा किसी सुंदरी को पसंद कर ले और उससे ब्याह करले। एक दिन जब मां ने अपनी बात कही, तब छछानछाडू ने उत्तर दिया-मां तुम्हारे समान सुंदर इनमें कोई नहीं। कहते हैं, तब बहादुर कलारिन को बेटे के इस उत्तर में कलुष का आभास हुआ और एक दिन उसने अपने बेटे को बावली में धकेल दिया। विद्वानों का मत है कि बहादुर कलारिन ने अपने पुत्र छछानछाडू को बावली में धकेल दिया और स्वयं खंजर मारकर मर गई।

गांव में आज भी एक मुर्ति का खंजर लिये हुये मिलती है, जो कलारिन माता की है। गोकुल प्रसाद दुर्ग दर्पण में लिखते हैं कि गांव में सोरा (सोलह) मुहल्ले थे, इसीलिये सोरर नाम पड़ा। प्राचीन नाम सरहरगढ़ भी था, जिसका उल्लेख राजिम के शिलालेख में भी किया गया है। नया थियेटर के नाटककार हबीब तनवीर ने सोरर की कहानी का नाट्य रूप देकर देश-विदेश में प्रचार किया है।

जात–पात की खुराफात

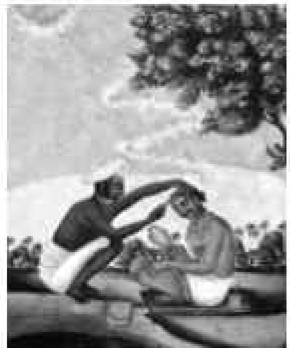

बच्चे की नाभि कौन काटता था मतलब पिता से भी पहले कौन सी जाति बच्चे को स्पर्श करती थी ?

आपका मुंडन करते वक्त कौन स्पर्श करता था ?

शादी के मंडप में नाईं और धोबन भी होती थी । लड़की का पिता, लड़के के पिता से इन दोनों के लिए साड़ी की मांग करता था ।

वाल्मीकियनो के बनाये हुए सूप से ही छठ व्रत होता हैं ।

आपके घर में कुँए से पानी कौन लाता था ?

भोज के लिए पत्तल कौन सी जाति बनाती थी ?

किसने आपके कपडे धोये ?

डोली अपने कंधे पर कौन मीलो मीलो दूर से लाता था और उनके जिन्दा रहते किसी की मजाल न थी की आपकी बिटिया को छू भी दे ।

किसके हाथो से बनाये मिटटी की सुराही से जेठ में आपकी आत्मा तृप्त हो जाती थी ?

कौन आपकी झोपड़ियां बनाता था ?

कौन फसल लाता था ?

कौन आपकी चिता जलाने में सहायक सिद्ध होता हैं ?

जीवन से लेकर मरण तक सब सबको कभी न कभी स्पर्श करते थे ।

और कहते है की छुआछूत था ??

यह छुआ छूत की बीमारी मुग़लों और अंग्रेजों ने सनातन धर्म को तोड़ने के लिए एक षड्यंत्र के रूप में डाली थी । जातियाँ थी, पर उनके मध्य एक प्रेम की धारा भी बहती थी, जिसका कभी कोई उल्लेख नहीं करता ।

अगर जातिवाद होता तो राम कभी सबरी के झूठे बेर ना खाते, निषादराज, केवट, आदिवासी, वनवासी उनके सहायक न होते जाति में मत टूटीये, धर्म से जुड़िये . . . देश जोड़िये ।

सभी को अवगत कराएं सभी जातियाँ सम्माननीय हैं।

जा तेरे स्वप्न बड़े हों ।
भावना की गोद से उतर कर,
जल्द पृथ्वी पर चलना सीखें ।
चाँद तारों सी अप्राप्य
ऊचाँइयों के लिये, रूठना
मचलना सीखें ।
हँसें, मुस्कुराएँ, गाएँ ।
हर दीये की रोशनी देखकर
ललचायें, उँगली जलाएँ ।
अपने पाँव पर खड़े हों,
जा तेरे स्वप्न बड़े हों ।

''दुष्यंत की नजर उनके युग की नई पीढ़ी के गुस्से और नाराजगी से सजी बनी है

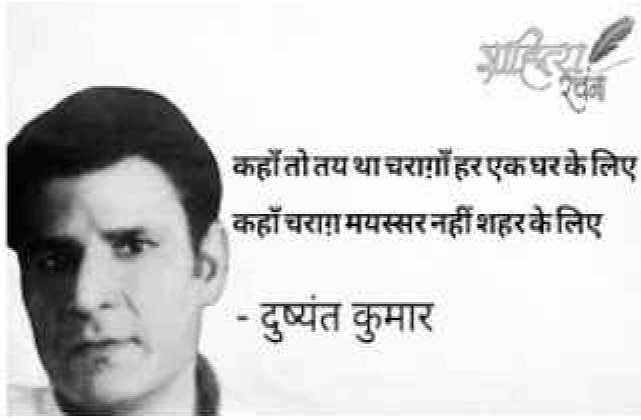

बकौल निदा फाजली - ''दुष्यंत की नजर उनके युग की नई पीढ़ी के गुस्से और नाराजगी से सजी बनी है। यह गुस्सा और नाराजगी उस अन्याय और राजनीति के कुकर्मों के खिलाफ नए तेवरों की आवाज थी, जो समाज में मध्यवर्गीय झूठेपन की जगह पिछड़े वर्ग की मेहनत और दया की नुमानंदगी करती है।''

दुष्यंत कुमार ने साहित्य की दुनिया में जब अपने कदम रखे उस समय भोपाल के दो शायरों 'ताज भोपाली' तथा 'कैफ भोपाली' का गजलों की दुनिया पर राज था। और हिन्दी में 'अज्ञेय' तथा 'मुक्तिबोध' की कठिन कविताओं का बोलबाला था। ऐसे समय में आम आदमी के कवि के रूप में दुष्यंत कुमार ने अपार ख्याति अर्जित की।

दुष्यंत कुमार ने दसवीं कक्षा से ही कविता लिखना प्रारम्भ कर दिया था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिंदी में बी.ए. और एम.ए. करने के बाद कथाकार कमलेश्वर और मार्कण्डेय तथा कविमित्रों धर्मवीर भारती, विजयदेवनारायण साही आदि के संपर्क से साहित्यिक अभिरुचि को नया आयाम मिला।

1958 में आकाशवाणी दिल्ली में आये। मध्यप्रदेश के संस्कृति विभाग के अंतर्गत भाषा विभाग में रहे। भोपाल में रहते हुए दुष्यंत कुमार ने 'परदेसी' उपनाम के साथ कविता और मुक्तक लेखन से शुरुआत की। आपातकाल के समय उनका कविमन क्षुब्ध और आक्रोशित हो उठा जिसकी अभिव्यक्ति कुछ कालजयी गजलों के रूप में हुई, जो उनके गजल संग्रह 'साये में धूप' का हिस्सा बनीं। सरकारी सेवा में रहते हुए सरकार विरोधी काव्य रचना के कारण उन्हें सरकार का कोपभाजन भी बनना पड़ा।

प्रसिद्ध गजल संग्रह 'साये में धूप' प्रकाशित हुआ। इसकी गजलों को इतनी लोकप्रियता हासिल हुई कि उसके कई शेर कहावतों और मुहावरों के तौर पर आज भी व्यक्त होते हैं।

बारसूर का युगल शिवालय - बत्तीसा मंदिर...

बस्तर के सभी शिवालयो मे बारसूर का युगल शिवालय वाला बत्तीसा मन्दिर। सिंहासन बत्तीसी में जहाँ बत्तीस पुतलिया जडी हुई थी वही इस मंदिर का मंडप बत्तीस स्तम्भो पर आधारित है जिसके कारण यह मंदिर बत्तीसा मन्दिर के नाम से ही जाना जाता है।

मंडप मे रखे हुए नन्दी पर शिल्पकार ने गजब की बारीक नक्काशी की। सुन्दर लड़वाली जंजीर पर लटकती घंटिया एकदम नयी सी लगती है। नन्दी महाराज के खुरो को इतने अच्छे तरीके से बनाया है जैसे बाहर की तरफ पैर मोड़ कर बैठा हुआ बछड़ा हो।

मन्दिर दो गर्भगृह युक्त है दोनो गर्भगृह में त्रिरथ शैली में निर्मित शिवलिंग स्थापित हैं। आकार प्रकार में बेहद आकर्षक एवं सुगठित है। इनकी एक अन्य विशेषता इन्हे सभी प्रस्तर शिवलिंग से अलग करती है। वह विशेषता है दोनों शिवलिंग का घुमना।ये ऐसे मात्र शिवलिंग है जिन्हे चारो ओर घुमाया जा सकता है। 800 सौ साल से ये शिवलिंग घुमाये जा रहे हैं।

ये दोनो शिवालय सोमेश्वर महादेव और गंगाधरेश्वर महादेव के नाम से शिलालेख में दर्ज है। सन 1210 में नाग शासन काल में राजमहिषी गंगमहादेवी ने यह मंदिर बनवाया था। एक शिवालय अपने नाम पर एवं दूसरा शिवालय अपने पति महाराज सोमेश्वर देव के नाम पर नामकरण किया।

ओम सोनी,
दंतेवाड़ा

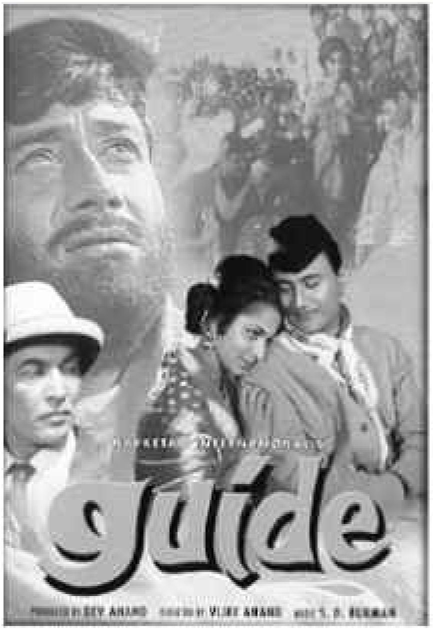

'सर्वश्रेष्ठ बॉलीवुड क्लासिक्स' फिल्म 'गाइड' के अधिकार, अभिनेता देव आनंद ने लेखक आरके नारायण से कैसे हासिल किया

२०१२ में टाइम पत्रिका ने हिंदी फिल्म गाइड को ''सर्वश्रेष्ठ बॉलीवुड क्लासिक्स'' की लिस्ट में जगह दी तब से अब तक की सर्वश्रेष्ठ बॉलीवुड फिल्मों में से एक माना जाता है।

पवन मेहरा

60 के दशक में देव आनंद को अमेरिकी निर्देशक टैड डेनियलवस्की और लेखक पर्ल बक ने आरके नारायण के 1958 के मशहूर उपन्यास 'द गाइड' पर आधारित एक अमेरिकी फिल्म में काम करने के लिए संपर्क किया लेकिन देव आनंद ने मना कर दिया क्योंकि उन्हें लगता था ऐसी फिल्म नहीं चलेगी।

लेकिन 1962 के बर्लिन फिल्म समारोह में जब डेनियलवस्की उनसे दोबारा मिले तो वो इस शर्त पर काम करने के लिए सहमत हो गए कि वो पहले इस उपन्यास को पढ़ेंगे। उपन्यास पढने के बाद उन्होंने मिस्टर बक से संपर्क किया क्योंकि उन्हें आरके नारायण की यह कहानी पसंद आई थी। देव आनंद ने पुस्तक के अधिकार हासिल करने के लिए नारायण से संपर्क किया। इसके बाद लेखक पर्ल बक ने फिल्म पर चर्चा करने के लिए देव को अमेरिका आने के लिए आमंत्रित किया। देव आनंद इस फिल्म को हिंदी और अंगेजी दोनों भाषाओं में बनाना चाहते थे लेकिन फिल्म की भारतीय और अमेरिकी प्रोडक्शन टीमों के बीच कई बार अनेको मुद्दों पर जमकर टकराव हुआ जिसके कारण आनंद को हिंदी संस्करण को स्थगित करना पड़ा।

इस अंग्रजी फिल्म में रोजी की भूमिका के लिए पहले सायरा बानो को चुना गया जिन्होंने यह रोल करने से मना कर दिया, फिर वैजयंतीमाला के नाम पर विचार हुआ लेकिन डायरेक्टर डेनियलवस्की ने उन्हें भी अस्वीकार कर दिया। अमेरिकी संस्करण के लिए देव आनंद ने जोर देकर कहा था कि 'वहीदा रहमान को नायिका के रूप में लिया जाए'। जब ये फिल्म इंग्लिश में शूट हो रही थी तो डारेक्टर ने वहीदा रहमान को बताया कि उन्हें सपेरे के साथ डांस सीक्वेंस करना है और असली सांप को पकड़ कर उसके मुंह पर 'किस' करना है। ये सुनकर वहीदा हंसने लगी और कहने लगीं – 'ये कैसे हो सकता है ?'

वहीदा की बात सुनकर डायरेक्टर साहब बहस करने लगे और कहने लगे – 'भारत में तो ये आम बात है'। वहीदा रहमान ने डायरेक्टर को समझाने की कोशिश की और कहा – 'आपको इंडिया के बारे में गलत इंफ़ॉर्मेशन है। सांप पकड़ना और उसके मुंह पर 'किस' करना दो अलग-अलग बातें हैं'।

उस वक्त सेट पर बड़ी-बड़ी लाइट्स जल रही थीं, गर्मी की वजह से पिटारे में बंद सांप बाहर निकल गया, जैसे ही सेट पर खबर फैली की सांप बाहर घूम रहा है, सबसे पहले डायरेक्टर भाग निकले। जब सांप पकड़ा गया और डायरेक्टर को वापस सेट पर बुलाया गया तो वहीदा ने कहा-'आप तो भाग निकले'। वहीदा की बात सुनकर डायरेक्टर टैड डेनियलवस्की ने कहा – 'मुझे तो सांप से डर लगता है, मैं इंडियन नहीं हूं।'। तब वहीदा ने कहा – 'आपकी तरह मुझे भी सांप से डर लगता है, आप सीन हटाकर बाकी गाना अच्छी तरह से शूट कीजिए।'

तब कहीं डायरेक्टर टैड डेनियलवस्की को समझ में आया कि वाकई सांप को 'किस' करना आसान नहीं है। इसमें विदेशी डायरेक्टर टैड डेनियलवस्की की भी कोई गलती नहीं थी। दरअसल उस समय विश्व में भारत की छवि 'स्नेक चार्मर' की बनी हुई थी। भारत को सांप और सपेरों का देश ही समझा जाता था।

निर्माण के दौरान इस तरह के कई टकराव आगे भी हुए किसी तरह फिल्म 'द गाइड' बनी लेकिन 'द गाइड' का यह अंगेजी संस्करण अमेरिका में बुरी तरह से फ्लॉप हो गया। उसके

बाद हिंदी संस्करण बना और इसका नाम 'द गाइड' से सिर्फ 'गाइड' रह गया।

देव आनंद के बड़े भाई चेतन आनंद ने खुद को हिंदी फिल्म 'गाइड' के निर्देशन से अलग कर लिया क्योंकि उन्हें फिल्म 'हकीकत' का निर्देशन करना था। राज खोसला से होता हुआ 'गाइड' के निर्देशन का जिम्मा विजय आनंद के पास आ गया। आरके नारायण के 1958 के उपन्यास द गाइड पर आधारित यह फिल्म राजू (देव आनंद) नामक एक टूरिस्ट गाइड और रोजी (वहीदा रहमान) नामक एक धनी बूढ़े पुरातत्वविद् मार्को (किशोर साहू) की जवान खूबसूरत पत्नी की कहानी बयां करती है जो पति द्वारा अनदेखा करने की वजह से गाइड राजू से प्यार करने लगती है।

नारायण के उपन्यास और फिल्म 'गाइड' में थोड़ा बदलाव किया गया। उपन्यास में राजू नायिका रोजी का प्यार पाने के लिये कई तरह से प्रयास करता है। लेकिन फिल्म में रोजी पहले ही अपनी शादी से दुःखी है और अपने पति मार्को को किसी और के साथ देखकर राजू के पास आ जाती है। फिल्म में राजू अपनी मौत से पहले मशहूर हो जाता है और वर्षा होने से गांव का अकाल भी दूर हो जाता है। उपन्यास में राजू की मौत गुमनामी में होती है और अकाल खत्म होने का भी कोई जिक्र नहीं है। देव आनंद के इस बदलाव को लेकर लेखक आरके नारायण नाराज भी हुए थे लेकिन जब 'गाइड' को ख्याति मिली तो उनकी नाराजगी भी दूर हो गई।

अंग्रेजी फिल्म 'द गाइड' को रिलीज होने के 42 साल बाद 2007 के कान फिल्म फेस्टिवल में फिर से दिखाया गया। 'द गाइड' नामक 120 मिनट का अमेरिकी संस्करण पर्ल एस बक द्वारा लिखा गया था और टैड डेनियलवस्की द्वारा निर्देशित निर्मित किया गया था।

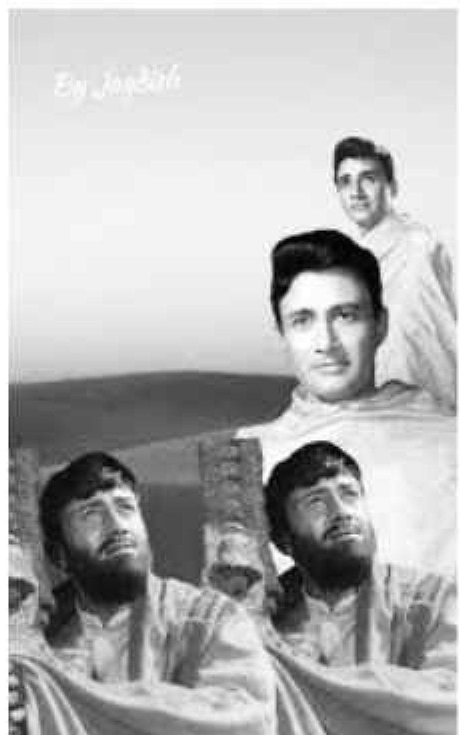

RO No. 13674/7 dtd. : 12/02/2026